ख़ज़ाना ज़िन्दगी का...

बिमला रावर सक्सेना

अनेकता में एकता का प्रतीक
के.बी.एस प्रकाशन, दिल्ली

ISBN No :- 978-99-90580-56-3

कर्म-बद्ध-संकल्प

के.बी.एस प्रकाशन दिल्ली

मुख्य कार्यालय :- 18/91-ए, ईस्ट मोती बाग, सराय रोहिल्ला, दिल्ली-110007

शाखा कार्यालय :- 26, प्रभात नगर, पीलीभीत रोड, बरेली, उत्तर प्रदेश

शाखा कार्यालय :- 74, एस.के.फुटकेयर, हथवा मार्किट, नज़दीक- पी.एन.बी. बैंक, छपरा, बिहार- 841301

दूरभाष :- 9871932895, 9868089950

Blogger :- https://kbsprakashan.blogspot.in

e-mail :- kbsprakashandelhi7@gmail.com
kbsprakashan@gmail.com

मूल्य : 240.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2021 © बिमला रावर सक्सेना

मुद्रक :- कौशिक प्रिन्टर नई दिल्ली

मुख्य आवरण – बिमला रावर सक्सेना

Book Name : KHAZANA ZINDAGI KA
by BIMLA RAWAR SAXSENA

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग या मंचन सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है, किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

ख़ज़ाना ज़िन्दगी का...

==========

हम हमारे जीवन में अनेक प्रकार की कविताओं को देखते हैं, फिर ज्यादातर लोग इस बात की हिमायत करते हैं कि जिन कविताओं में करुणा नहीं होती, वे कविता नहीं होतीं। मेरा अपना ऐसा मानना है कि जिन कविताओं में जीवन के प्रति मानवीयता नहीं होती, वे कुछ भी हों लेकिन कवितायें नहीं होतीं। जीवन से निकली हुई कवितायें जब आदमी के अंदर मन में अपने हर्ष और अपनी पीड़ा का संचार करने में सक्षम हो जाती हैं, तब कविताओं को केवल और केवल मन की परिभाषा ही परिभाषित करती है।

हमारे जीवन में प्रकृति ने अनेक प्रकार के रंग भरे हैं। प्रकृति के इन रंगों और जीवन के इन अनुभवों के साथ खेलते-खेलते कविता की एक नन्हीं कोपल बढ़ते-बढ़ते, जब उम्र के आठ दशक पार कर लेती है, ऐसी स्थिति में कवितायें सिर्फ़ कविता नहीं रह जातीं, वे जीवन, आदत और दर्शन बन जाती हैं।

मैं अपने जीवन में अनेक पुस्तकों का पाठक रहा हूँ, यद्यपि साहित्य मेरी शिक्षा का कभी विषय नहीं रहा। लेकिन साहित्य के बिना जीवन बहुत असंभव-सा लगता है। साहित्य में घटित होने वाली अनेक घटनायेँ हमारे जीवन के अंदर जब हमें हमारी-सी लगने लगती हैं, तो मन को बहुत राहत पहुंचाती हैं। विमला रावर सक्सेना जी की कविताओं को पढ़ते हुए, मुझे बहुत आत्मिक सुख मिलता है। जिस प्रकार से उनका प्रकृति के प्रति, अपने वातावरण के प्रति, देश, समाज और समाज में हो रही घटनाओं के प्रति सजगता से चित्रण देखने को मिलता है, वह बहुत ही सरलता से पाठक को आह अथवा वाह कहने के लिए बाध्य कर देता है।

'ख़ज़ाना ज़िन्दगी का' काव्य-संग्रह एक ऐसी ही पुस्तक के रूप में आ रहा है, जिसमें जीवन के अनेक रंग हैं। जहाँ प्रकृति से भी संवाद देखने को मिलता है, जहाँ अपनों के प्रति शिकायत का लहजा है, जहाँ सरकार और समाज के सरोकार की कवितायें हैं, वही नितांत अपनत्व से भरी हुई रचनाएं भी शामिल हैं।

क्यों हमें तुम बाँधते हो
संकुचित सीमाओं में
हमको रहने दो
क्षितिज से दूर की सीमाओं में
हम रहेंगे दूर जात और पात की सीमाओं से
हम रहेंगे दूर धर्म और देश की सीमाओं से
हम नए पौधे हैं, हमको फैलने दो प्रेम से
हम बना लें, विश्व को परिवार अपने प्रेम से

ऐसी वैश्विक भावना एक कवि ही कर सकता है। संपूर्ण जगत और सृष्टि प्रेममयी है। जो भी इस भाव से इस संसार को देखता है, उसे फिर कोई पराया नज़र नहीं आता, सब उसके हो जाते हैं, और वह सब का हो जाता है। ऐसे प्रेम को परमात्मा भी पसंद करता है। मनुष्य के जीवन के बारे में कवयित्री विमला रावर जी अपनी एक रचना में लिखती हैं :-

मेरा गहना मेरा चरित्र
देखे हैं बड़े-बड़े नेता
देखे हैं सुंदर अभिनेता
देखे हैं अरबपति मैंने
देखे हैं साधु यति मैंने
पर झांका जब उनके मन में
मेरा मन डूबा क्रंदन में

यही सब तो हमारे आस-पास हो रहा है, आज चरित्र मात्र एक शब्द बनकर रह गया है। जीवन की गुणवत्ता हमारे जीवन की आत्मा है, किंतु चरित्र के बिना क्या अब हम और हमारा समाज जीवित बचा है? इस कविता में हमें हमारे समय के नायकों के चरित्र से निराशा ही हाथ लगी है, और इस बात की संस्तुति कवयित्री विमला रावर जी अपनी इस कविता में करती हैं।

अश्रु बनकर बह गए
सपने सभी मेरे हृदय के
बिक गए बे-भाव जग में
भाव सब मेरे हृदय के
काँच से चटके कभी हम
कभी पिघले मोम से
आग से अपनी जले हम
ज़िन्दगी के होम में

यही तो हमारे जीवन का सच है। आजकल किसी के मन के भावों को कोई अपने जीवन में वरीयता कहाँ देता है, हर कोई तो सिर्फ़ अपनी-अपनी चलाना जानता है। दूसरे के स्थान पर बैठकर सोचने का स्वाध्याय हमारे जीवन से विलुप्त हो गया है, और यही कारण है कि हमारे जीवन में ख़ुशियों का अभाव है, अपनेपन का अभाव है। हम लोग इतने कृतघ्न हो गए हैं कि हम दूसरे के बारे में पलभर के लिए भी नहीं सोचते हैं, और अपनी चाल चलने से बाज नहीं आते हैं।

जीवन के आठवें दशक में भी बिमला जी की ऊर्जास्विता देखने लायक है, और उसके पीछे जो मूल कारण है, वह जीवन के प्रति उनकी सकारात्मकता है।

जो भी करना है लगाकर दिल करो यारो
जीना है जीभर जियो, मर जाओ फिर यारो
जब मोहब्बत तुम करो, दिल से करो यारो
जब करो नफ़रत, तो नफ़रत से करो यारो

जो जिया जीभर, उसे साहिल मिला यारो
जो भी करना है, लगाकर दिल करो यारो
ज़िन्दगी है कीमती, उसे यूं ही गँवाओ न यारो
वक़्त रहते सीख लो, और संभल जाओ यारो

जीवन के प्रति एक मनुष्य का जो दृष्टिकोण होना चाहिए, वह इस कविता में मौजूद है। एक बहुत अच्छी सीख भी हमें यह कविता देती है कि हमें अपने जीवन में किसी से नफ़रत नहीं करनी है, हमेशा प्रेम को तरज़ीह देनी है। जीवन में समय बहुत सीमित है, इसलिए हमें अपने जीवन में बहुत संभलकर रहना चाहिए।

हम अपने जीवन में अनेक प्रकार के स्वप्न देखते हैं, सपने देखना बुरी बात नहीं है, लेकिन स्वप्नों की मृग मरीचिका में फँसकर अपने अमूल्य जीवन का विनाश कर लेना कभी भी अच्छा नहीं माना जाएगा।

क्या मानव के सभी स्वप्न साकार हुआ करते हैं
क्या झूठी आशाओं के आधार हुआ करते हैं
मुरझा जाते अधखिले फूल
फूलों के बदले मिले शूल
आशायें मिटकर बने धूल
फँस जायें भँवर में दूर कूल
क्या मृग मरीचिका में फँसकर उद्धार हुआ करते हैं
क्या मानव के सभी स्वप्न साकार हुआ करते हैं

निराश होने से पहले हमें कवयित्री की इन पंक्तियों पर विचार जरूर करना चाहिए, जो कहीं न कहीं हमें जीवन के प्रति आशावान होने का संदेश दे रही हैं। हमें अपने जीवन की सकारात्मकता को कभी भी नहीं खोना चाहिए।

हर स्त्री के मन की बात को उनकी कुछ पंक्तियां अपनी कविता में इस प्रकार व्यक्त करती हैं :-

हाँ, मैं नारी हूँ- एक उपेक्षित नारी
मैं तुमसे केवल एक ही प्रश्न
बार-बार पूछती हूँ
तुमने मुझे समझने का प्रयास
क्यों नहीं किया?

स्त्री का यह प्रश्न न जाने कब से अपना मुँह बाए खड़ा हुआ है, और स्त्री को इतनी आज़ादी देने के बाद भी यथावत बना हुआ है। क्या इस दुनिया की आधी आबादी को आज के तथाकथित विकसित समाज के अंदर भी ऐसे प्रश्न उठाने की जरूरत है? अगर हम अपने आसपास नज़र डालें तो हमें इस बात का अहसास होता है कि अभी भी ऐसे प्रश्न उठाने की सख्त जरूरत है। हमारे समाज में आज भी लैंगिक भेदभाव मौजूद है। स्त्री की दशा में सुधार का ढिंढोरा पीटने के बावजूद भी, स्त्री आज भी प्रताड़ना की शिकार है। संबंधों की बलिवेदी पर आज भी स्त्री के जीवन की बलि दी जा रही है।

अक्सर हम ज़िन्दगी के प्रति शिकायतें करते रहते हैं, यह हमारा स्वभाव है, और इसका कारण है कि हमारा मन हमेशा अतृप्त रहता है। एक आशा पूरी होती है, तो दूसरी नई आशा का जन्म हो जाता है, इस कारण जीवन की तुलना मृगतृष्णा से भी की गई है।

ज़िन्दगी तेरे ख़ज़ाने ने मुझे क्या न दिया
एक-एक पल मेरे दिल ने तुझे याद किया
कभी ख़ुशियों की बरसात से नहलाया मुझे
कभी फूलों की तरह प्यार से सहलाया मुझे
कभी दे-दे के थपकियाँ सुलाया मुझे
कभी सुनहरे सपनों में भी भुलाया मुझे
कभी बिछड़े से भी मिलाया मुझे
कभी विरह अग्नि में जलाया मुझे
जो दिया तूने ख़ुशी से वह लिया
ज़िन्दगी तेरे ख़ज़ाने ने मुझे क्या न दिया
कभी हँसाया मुझे और कभी रुलाया मुझे

यही तो हम सब के जीवन की कहानी है। जितनी जल्दी ज़िन्दगी के दिए हुए को स्वीकार करना सीख जाते हैं, उतनी जल्दी ही हमारे जीवन के अंदर स्थिरता आना शुरू हो जाती है। जीवन में आई हुई हर चीज के प्रति कृतज्ञता का भाव हमारे जीवन को और अधिक सुंदर बना देता है।

इस काव्य-संग्रह की यह तो मात्र एक झलकीभर है। समस्त रचनाओं के विषय में लिखना भी असंभव है। लेकिन मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि जब पाठक इन कविताओं को पढ़कर अपने जीवन और मन के साथ जुड़ेंगे, तब उन्हें भी ये सभी कवितायें अपनी ही कहानी लगेंगी। यही इन कविताओं की सफलता है।

मैं बड़ी बहन बिमला रावर सक्सेना जी को उनके इस महती प्रयास के लिए और उनके सतत लेखन के लिए, साथ ही जीवन में सकारात्मकता से हमेशा परिपूर्ण रहने के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

केदारनाथ 'शब्द मसीहा'
नई दिल्ली

ख़ज़ाना जिन्दगी का

मैं अपने पाठकगणों की सेवा में अपना नया काव्य-संग्रह 'ख़ज़ाना ज़िन्दगी का' भेंट कर रही हूँ। बड़ी ही सीधी-सादी, सरल भाषा में लिखी कुछ काव्य रचनायें अपने सहृदय पाठकगण को, हृदय से निकली उन शब्दावलियों, भावनाओं और अभिव्यक्तियों को अर्पित करना चाहती हूँ, जो अचानक ही हृदय से निकलकर काग़ज पर बिखर जाती हैं। सरल भाषा, सीधी बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना, इसलिए भी आवश्यक हो गया कि बहुत से नई पीढ़ी के पाठक हिन्दी पढ़ने में, हिन्दी की कविता पढ़ने में रुचि लेना कम कर रहे हैं, जबकि मातृभाषा से नाता जोड़े रखना अत्यंत आवश्यक है। इसी सोच-विचार में दिल ने कहा, जो सीधे-सादे, सरल शब्द दिल से निकलते हैं, जिस भाषा में रात की मीठी-सी नींद में हमें सपने दिखाई देते हैं, जिस भाषा में गहरे दुख के समय दिल रोकर पुकार उठता है ...हाय माँ-बाबूजी! आपके बिना मेरा ध्यान कौन रखेगा, मुझे अच्छा मार्ग कौन दिखाएगा। प्रिय पाठकगण यदि मेरे दिल से निकली मेरी कवितायें आपको अपनी-सी लगें, आपके हृदय को स्पर्श करें, तो मेरा लिखना धन्य हो जाएगा। यह विनम्र कृति आपके कर कमलों में समर्पित करती हूँ।

मेरे बंधु केदारनाथ 'शब्द मसीहा' द्वारा मेरी पुस्तक 'ख़ज़ाना ज़िन्दगी का' के विषय में लिखी भावाभिव्यक्ति ने मेरे हृदय को गद्‌गद्‌ कर दिया है। मेरे अन्तर्मन में समाहित मनोभावों के जीवित इतिहास को आत्मिक सुख मानकर मेरी आत्मा को जिस अमृत से सिंचित किया है, वह अवर्णनीय है। मेरी कविताओं के एक-एक शब्द में निहित, मेरे मनोभावों को समझकर, उन शब्दों और पंक्तियों में निहित मेरे हृदय, और मेरे दृष्टिकोण को जिस प्रकार साकार कर दिया है, वह वंदनीय है। वास्तव में केदार नाथ जी मेरे लिए बंधु, मित्र, पथप्रदर्शक हैं, अपनी दीदी माँ को सहारा देते हैं, और अपनी बातों और पुस्तकों के द्वारा साहित्य, समाज और दुनिया की सैर भी करवाते हैं। हर रूप में उनकी आभारी हूँ, तथा आशीर्वाद सहित प्रभु से प्रार्थना करती हूँ कि उनकी लिखी पुस्तकें साहित्य भंडार को समृद्ध

करती रहें। मैं इस पुस्तक के प्रकाशक संजय 'शाफ़ी' को अपना धन्यवाद, आशीर्वाद और शुभकामनाएँ देती हूँ कि वे अपने प्रकाशन संस्थान द्वारा लेखकों के साथ सहयोग पाते रहें, और अपने इस पुनीत कार्य में सफलता प्राप्त करें।

बिमला रावर सक्सेना
नई दिल्ली
बुद्ध पूर्णिमा, 26-05-2021

अनुक्रमांक

1. क्यों हमें तुम बाँधते हो 19
2. मेरा चरित्र 20
3. दूसरे के दोष 21
4. बहते सपने 22
5. ख़ुद से बेगाने 23
6. दिल से करो यारो 24
7. बड़ी मुश्किल है 25
8. आस तो मिलती नहीं 26
9. करता हिम्मत जो 27
10. कुछ बुझ सा जाता है 28
11. मृग मरीचिका 29
12. मंज़िलें खो गईं 30
13. लूट लिया उपवन को 31
14. एक चाह 32
15. तुम दीप मेरे 33
16. उपेक्षित का प्रश्न 34
17. मेरा अस्तित्व 35
18. दो चेहरे 36
19. कौन सी ख़ता 37
20. साँस का आना 38
21. बेवफ़ा 39
22. बेरहम 40
23. जितना नसीब था 41
24. चंद लम्हे 42
25. कौन सा नाता 43
26. आघात 44

27. सन्नाटा 45
28. साधिका 46
29. अपनों का अपनापन 47
30. शान्त 48
31. अनोखा मेल 49
32. अविकार 50
33. यादों की रेल-पेल 51
34. भयग्रस्त 52
35. जब कोई याद 53
36. आगे चले आओ 54
37. ज़िन्दगी फिसल जाती है 55
38. सन्तुलन बिन्दु 56
39. आत्माओं के बन्धन 57
40. निन्यानवे के फेरे 58
41. बेसुरा शोर 59
42. भीड़ का हिस्सा 60
43. गाँठ लगी तार 61
44. ताश के महल 62
45. आज भर की आस 63
46. यादों की मुरली 64
47. कितना पानी बहा नदी में 65
48. नहीं सवेरा 66
49. तुम्हें भुला न पाये 67
50. अन्तहीन घेरों में 68
51. उलझे सुलझे सपने 69
52. गीत 70
53. जीने के संघर्ष में 71
54. उठो वीर 72

55. कल्पना और यथार्थ 73
56. सपने सुनहरे 74
57. मजबूरियाँ 75
58. गीत 76
59. उन्माद निराला 77
60. कैसे जियें ये ज़िन्दगी 78
61. एक चूहे के प्रश्न 79
62. विश्वास की नींव 80
63. ज़िन्दगी की कहानी 81
64. इन्सानियत को जीने दो 82
65. स्वार्थान्ध 83
66. जब आँख खुलती है 84
67. कुछ सपने देखे थे 85
68. उसे सोने दो 86
69. मुट्ठियों में क़ैद तूफ़ान 87
70. पुराने गिले शिकवे 88
71. रिश्तों के जाल 89
72. यादों की ऊहापोह 90
73. वही होता है मसीहा 91
74. धर्म की सारी परिभाषायें 92
75. चंद अशआर 93
76. ख़ुद से दूर 94
77. विकस उठा एक पुष्प 95
78. कालिदास के मेघदूत 96
79. नियति की आड़ में 97
80. सम्बन्धों की बलिवेदी पर 98
81. नया मोड़ प्यारा सा 99
82. जाकर आता हूँ 100

83. मनाने के लिये... 101
84. समय-समय के चक्र 102
85. ख़ुशबू रहे जहाँ भी 103
86. एक दर्द 104
87. चाहतें 105
88. टूट गई ज़िन्दगी 106
89. क्या चाहा 107
90. सत्य की पोशाक 108
91. छोटे थे मेरे हाथ ही 109
92. शायद कभी 110
93. मुझे किसने पुकारा 111
94. ये दिल चोर है 112
95. कैसे झूठे पे 113
96. जो सही राह है 114
97. बरसो बरस-बरस बरसो 115
98. सुहावना सावन 116
99. वसुधा कुटुम्ब सबका नारा 117
100. कौन सा नाम दें 118
101. सुलग रही हो तिल-तिल 119
102. कन्हैया-कन्हैया 120
103. थोड़ा प्यार बाँटते रहना 122
104. ज़िन्दगी का ख़ज़ाना 123
105. अनुगूँज गूँजती हरदम 124
106. जंगल की ख़ामोशियाँ 125
107. जीवन और प्रकृति का मेल 126
108. अस्तित्व को खोने का विष 127
109. स्मृतियों में क़ैद कहानियाँ 128
110. सिर्फ़ अपने लिये ही नहीं 129

111. यादें-यादें-यादें-यादें 130
112. शिकायत थोड़ी 131
113. क्या दिन थे सुहाने 132
114. खो गई मेरी कविता 133
115. वंदना सृष्टि की अभी तलक 134
116. तमाशा है ज़िन्दगी 135
117. किनारा किसको मिलता है 136
118. बरसो तुम मेघा 137
119. कहाँ से आते बाद 138

क्यों हमें तुम बाँधते हो?

क्यों हमें तुम बाँधते हो
संकुचित सीमाओं में
हमको रहने दो
क्षितिज से दूर की सीमाओं में
हम रहेंगे दूर ज़ात और पात की सीमाओं से
हम रहेंगे दूर धर्म और देश की सीमाओं से
हम नये पौधे हैं हमको फैलने दो प्रेम से
हम बना लें विश्व को परिवार अपने प्रेम से
तुम न हममें फूट डालो हम बढ़ायें एकता
दूर कर शैतानियत को हम बनेंगे देवता
आज हम छोटे हैं पर होंगे बड़े जो प्रेम से
जीत लेंगे विश्व के सब धर्म अपने प्रेम से
कौन हिन्दू, सिक्ख, मुस्लिम
कौन यह ईसाई है
ख़ून सबमें लाल है
हम सब ही भाई-भाई हैं

ooo

मेरा चरित्र

मेरा गहना मेरा चरित्र
देखे हैं बड़े-बड़े नेता
देखे हैं सुन्दर अभिनेता
देखे हैं अरबपति मैंने
देखे हैं साधु यति मैंने
पर झाँका जब उनके मन में
मेरा मन डूबा क्रन्दन में
न झूठे वादे करता मैं
न रिश्वत लेकर हँसता मैं
न साधू बनकर ठगता मैं
न ग़लत बात पर झुकता मैं
मैं अच्छी बातें सुनता हूँ
मैं अच्छी बातें करता हूँ
तुम मत समझो मुझको विचित्र
मेरा गहना मेरा चरित्र
बस बात मेरी यह सुन लेना
आँखें होतीं दिल का आईना
जो दिल में तुम्हारे होता है
आँखें और चेहरा बताते हैं
कितने ही गहने पहनो, दिल के
भेद नहीं छुप पाते हैं
जितना अच्छा होगा चरित्र
उतना ही दिल होगा पवित्र
इतना ही कहता हूँ मैं मित्र
मेरा गहना मेरा चरित्र
○○○

दूसरे के दोष

देख मत तू दूसरे के दोष को
अपने मन में भी
ज़रा जू झाँक ले
दूसरा अच्छा है या फिर है बुरा
इससे पहले तू
स्वयं को आँक ले
इक बुराई दूसरे की देखकर
सौ नज़र अपने में भी
आ जायेंगी
एक उँगली जो उठेगी और पर
तीन अपनी ओर भी
उठ जायेंगी
इसलिये कहता हूँ
रोको क्रोध को
मत निकालो दूसरे के
दोष को
प्यार से अपने सभी हो जायेंगे
दोष देकर तू घृणा को न बढ़ा
गर बुराई मित्र में देखी कभी
स्नेह की भाषा से उसको तू पढ़ा
दोषारोपण तो
नहीं है हल कोई
तुम कभी छोड़ो न
अपने होश को
देख मत तू
दूसरे के दोष को
○○○

बहते सपने

अश्रु बनकर बह गए
सपने सभी मेरे हृदय के
बिक गए बेभाव जग में
भाव सब मेरे हृदय के

काँच से चटखे कभी हम
कभी पिघले मोम से
आँच से अपनी जले हम
ज़िन्दगी के होम में

इक अजब-सी है कहानी
क्या कहूँ काँटे हृदय के
अश्रु बनकर बह गए
सपने सभी मेरे हृदय के

क्या बतायें, क्या छिपायें
क्या सहें क्या सह न पायें
कौन सी मन्नत करेगी
पूर्ण इस दिल की दुआयें

कौन देखे खोलकर अब
घाव इस घायल हृदय के
अश्रु बनकर बह गए
सपने सभी मेरे हृदय के

ooo

ख़ुद से बेगाने

जब से आये तुम नज़र के सामने
हम तो दीवाने तभी से हो गए
तुमने जब से दी शमा दिल में जला
हम तो परवाने तभी से हो गए

बन गए तुम राज जब से जिगर के
हम तो अफ़साने तभी से हो गए
जब से तुमको है लिया अपना बना
ख़ुद से बेगाने तभी से हो गए

जब से जाना हमने तुमको ऐ सनम
सबसे अनजाने तभी से हो गए
उस ख़ुदा की बन्दगी को भूलकर
बन्दगी तेरी ही हम करते गए

जब से आये तुम नज़र के सामने
हम तो दीवाने तभी से हो गए

ooo

दिल से करो यारो

जो भी करना है लगाकर दिल करो यारो
जीना है जीभर जियो मर जाओ फिर यारो
जब मोहब्बत तुम करो दिल से करो यारो
जब करो नफ़रत तो नफ़रत से करो यारो

प्यार से जब इंकार करो तब दिल से करो यारो
प्यार का इक़रार करो तब दिल से करो यारो
तल्ख़ियाँ भरनी हैं तो जीभर कर भरो यारो
चाहियें ख़ुशियाँ तो ख़ुश होकर जियो यारो

जो जिया जीभर उसे साहिल मिला यारो
जो भी करना है लगाकर दिल करो यारो
ज़िन्दगी है क़ीमती उसे यूँ ही गँवाओ न यारो
वक़्त रहते सीख लो और सँभल जाओ यारो

ज़िन्दगी के समंदर को दिल से पार करो यारो
साहिल तक जाना है तुमको मँझधार में न रहना यारो

○○○

बड़ी मुश्किल है

तुम हमें भूल भी जाओ तो तुम्हारी है ख़ुशी
हम तुम्हें भूलना भी चाहें
तो बड़ी मुश्किल है
तुम अगर हमको सताओ तो तुम्हारी मर्ज़ी
हम अगर रोना भी चाहें
तो बड़ी मुश्किल है
हमने पूजा है तुम्हें
देवता माना है तुम्हें
रात दिन तुमको सराहा
ख़ुदा जाना है तुम्हें
कैसे शिकवा करें तुमसे
ये बड़ी मुश्किल है
मेरे सरताज, मेरे प्राण, मेरी शान तुम्हीं
मेरा अर्चन, मेरा वंदन, मेरा ईमान तुम्हीं
बेवफ़ा कैसे कहें तुमको
बड़ी मुश्किल है
दूरियाँ तुमने बढ़ा लीं
हम तड़पते ही रहे
आँखों में लिये अश्क
हम तो सिसकते ही रहे
दर्द कहना भी नहीं
सहना भी बड़ी मुश्किल है
तुम हमें दिल से निकालो तो तुम्हारी मर्ज़ी
हम तो सपने में भी सोचें
ये बड़ी मुश्किल है

○○○

आस तो मिलती नहीं

हर दर-ओ-दीवार से
सर को तो टकराया बहुत
पर सुकूँ की आस तो
मिलती नहीं
जो बिछड़ कर ज़िन्दगी से
दूर हमसे हो गये
उनके आने की कोई भी
आस तो मिलती नहीं
लम्हा-लम्हा ज़िन्दगी का
एक इंतज़ार बनकर रह गया
उन चंद लम्हों के
ख़त्म होने की आस तो
मिलती नहीं
साँसों का आना-जाना ही
ज़िन्दगी की निशानी है
पर चैन की इक साँस तो
मिलती नहीं
अन्दर और बाहर
सब तरफ़ अँधेरा है
उजाले की कोई आस तो
मिलती नहीं
○○○

करता हिम्मत जो

ज़िन्दगी ख़ाक किये जाने से क्या हासिल है
जो तेरे सामने है वो ही तेरा साहिल है

चंद लम्हे हैं सजाये जा सँवारे जा इन्हें
कल हो कब कौन कहाँ आज निखारे जा इन्हें

पल दो पल के लिये जश्ने बहाराँ आया
ये तेरे दिन हैं सनम, यूँ क्यूँ लुटाता है उन्हें

ये तो दुनिया का चलन है कि दबाते हैं सभी
अपने दमख़म व भरोसे पे झुकाये जा इन्हें

यूँ तो मायूस न हो, यूँ न कुचल शीशा-ए-दिल
करता हिम्मत जो बशर, वो ही सभी क़ाबिल है

ज़िन्दगी घूमती रहती है, दुनिया के समंदर में दोस्त
जो डूबकर भी निकल जाए उसको ही मिलता साहिल है

ज़िन्दगी ख़ाक किये जाने से क्या हासिल है
जो तेरे सामने है, वो ही तेरा साहिल है

○○○

कुछ बुझ सा जाता है

वीरानियाँ दिल की क्या मैं कहूँ
वीराना भी शरमाता है
ख़ुशियों को मंज़र देखूँ तो
दिल डर के घबरा जाता है
सन्नाटों के अहसासों से
कुछ लगता सुकूँ है अपने को
कुछ आहट सी मिल पाते ही
मन में कुछ खल सा जाता है
इस दिल की ख़लिश में कुछ दम है
तब ही तो गुज़रती जाती है
वरना तो गुज़रने की हद से
इंसान गुज़रता जाता है
अपनों से आँखें बंद करूँ
बेगानों से घबरा जाऊँ
दिल वीराने में जगता है
गुँजानों में सो जाता है
न ग़म के फ़साने कह पाऊँ
न दुख की कहानी सुन पाऊँ
दीये की लौ सा जल-जलकर
मन में कुछ बुझ सा जाता है

○○○

मृग मरीचिका

क्या मानव के सभी स्वप्न साकार हुआ करते हैं
क्या झूठी आशाओं के आधार हुआ करते हैं
मुरझा जाते अधखिले फूल
फूलों के बदले मिलें शूल
आशायें मिटकर बनें धूल
फँस जायें भँवर में दूर कूल
क्या मृग मरीचिका में फँसकर उद्धार हुआ करते हैं
क्या मानव के सभी स्वप्न साकार हुआ करते हैं
है किसने आज तलक देखा
किसके जीवन का कहाँ लक्ष्य
सब उसके इंगित पर चलते
सबको बाँधे है इक अदृश्य
क्या याचक को भी जीने के अधिकार हुआ करते हैं
क्या मानव के सभी स्वप्न साकार हुआ करते हैं

○○○

मंज़िलें खो गईं

हसरतें अपनी कह भी न पाये अभी
ख़त्म होने लगी ग़म भरी ज़िन्दगी
दिल में कितने ही अरमाँ मचलते रहे
ग़म दबाये हुये हम बहलते रहे
मंज़िलें खो गईं, क़िस्मतें सो गईं
छोड़कर चल दिये पथ के साथी सभी

आँसुओं के ख़ज़ाने लुटाते रहे
दाग़ दिल के सभी से छुपाते रहे
हाय कब तक सहें, दर्द किससे कहें
सब्र का जाम भर भी तो जाता कभी
हसरतें अपनी कह भी न पाये अभी
ख़त्म होने लगी ग़म भरी ज़िन्दगी

○○○

लूट लिया उपवन को

लूट लिया उपवन को उपवन के माली ने
तोड़ दिया फूलों को फूलों की डाली ने

भ्रमरों ने रस लेकर फूलों को छोड़ दिया
मुरझाये फूलों को देखा मुख मोड़ लिया

पथ ने ही घात किया राही पथ भूल गया
मग का हर फूल आह बदला बन शूल गया

किसने है साथ दिया जब विधि ख़ुद वाम हुआ
पिसना ही जीवन है जीवन गुमनाम जुआ

जीना तो एक फ़र्ज़ जिसको है सिर्फ़ जिया
अमृत बँट बिखर गया विष को हर रोज़ पिया

निकले न आह कहीं होठों को आज सिया
सहना बस सहना है अविचल प्रण आज किया

घेर लिया नील गगन अँधियारी काली ने
लूट लिया उपवन को उपवन के माली ने

○○○

एक चाह

जितना ही सुख चाहा मैंने
उतना ही अवसाद मिला
जितनी शांति हृदय ने चाही
उतना ही उन्माद मिला
जब-जब ही सुख के क्षण चाहे
दुख के बादल घिर आये
और प्रकाश का पथ देखा तो
अँधियारे ही भर आये
जिससे चाहा स्नेह भरा स्वर
उससे ही आघात मिला
जितना ही सुख चाहा मैंने
उतना ही अवसाद मिला
एक-एक कर छोड़ गए सब
पथ में जो साथी आए
मंज़िल तक पहुँचाने वाले
बीच भँवर में तज आये
मेरी विनय भरी वाणी को
सदा कटुक प्रतिवाद मिला
जितना ही सुख चाहा मैंने
उतना ही अवसाद मिला

○○○

तुम दीप मेरे

प्राण तुम आधार मेरे
पंछी मैं तुम आकाश मेरे
बह रही एकाकिनी सी
ज्यों नदी की धार बहती
रह रही जग में अकेली
घात प्रत्याघात सहती
उर्मियों में एक दिन
मिल जायेंगे ये श्वास मेरे
छिन्न तब हो जायेंगे सब
कष्ट पीड़ा त्रास मेरे
मंद बहती लहर में भी
गान अपना ही सुनोगे
मैं लहर तुम गीत मेरे
स्नेह मैं तुम प्रीत मेरे
घिर गया तम आज मेरे
भाग्य के नीले गगन में
किन्तु फिर भी उड़ रही मैं
ज्योति रेखा की लगन में
दूर क्षितिज में कहीं
उड़ जायेंगे जब ये प्राण मेरे
तब करुण स्वर में तुझे
आवाज़ दूँगी त्राण मेरे
निविड़ तम में ज्योति देकर
तुम मुझे अवलम्ब दोगे
मैं निशा तुम चाँद मेरे
पंछी मैं तुम आकाश मेरे

ooo

उपेक्षित का प्रश्न

हाँ मैं नारी हूँ - एक उपेक्षित नारी
मैं तुमसे केवल एक ही प्रश्न
बार-बार पूछती हूँ
तुमने मुझे समझाने का प्रयास
क्यों नहीं किया?
मेरी झुकी पलकों के
शर्मीले इशारों को
मेरे अन्तर के
मीठे और कोमल विचारों को
मेरी नज़रों से दिए गए
हर एक जवाब को
मेरी ज़िन्दगी की खुली किताब को
स्नेह और विश्वास से
पढ़ने का प्रयास
क्यों नहीं किया?
मैं तो कोरा काग़ज़ थी
तुमने उस पर
अपने मन की रचना
गढ़ने का प्रयास क्यों नहीं किया?
यदि करते -
तो शायद यह जीवन कुछ और होता
और मैं -
तुम्हारे दिल के अन्दर से प्रवेश कर
तुम्हारी आत्मा में समा जाती
और यह उपेक्षिता
सीता बनकर
अपने राम में रम जाती ○○○

मेरा अस्तित्व

एक तुम ही तो मेरी पहचान हो
वरना हमको जानता ही कौन है
तुम मिले सारा ज़माना मिल गया
वरना हमको मानता ही कौन है

मैं भटकती इक अकेली बूँद थी
तुम मिले मैं बन गई सागर सनम
एक जीवन में ही मैंने जी लिए
बन के पागल प्यार में लाखों जनम

शून्य थी मैं अंक तुम मेरे बने
बन गई अधिकार की अधिकारिणी
मैं धरा थी तुम गगन मेरे बने
मैं मरुस्थल और तुम थे वारिणी

मैं भटकती आत्मा थी एक बस
तुम मिले बनकर मुझे परमात्मा
यह तुम्हारी प्रेरणा उत्साह है
शक्ति बन मेरे हृदय में जो रमा

एक तुम से ही मेरा अस्तित्व है
यूँ हमें पहचानता ही कौन है
एक तुम ही तो मेरी पहचान हो
वरना हमको जानता ही कौन है

○○○

दो चेहरे

सिर्फ़ तुम ही दुनिया में रहते नहीं
सिर्फ़ तुम ही दुख दर्द सहते नहीं
है यही तो जगत का पुराना चलन
प्यार से मिलते हैं और मन में जलन
वो न विश्वास करते न विश्वास देते
न हैं प्यार देते न हैं प्यार लेते
भुलावों से झूठे हैं ख़ुद को ही छलते
दिलों में अंधविश्वास लेकर हैं चलते
तुम्हें बन्धु बस काम इतना है करना
भला न करो तो बुरा भी न करना
ये दर्द और ग़म तो हैं चलते ही रहते
दिखाओ न इनको कभी ज़िन्दगी में
अगर रो के काटोगे तुम ज़िन्दगी को
रहोगे अकेले सदा ज़िन्दगी में
कभी तुम न रोकर दिखाना किसी को
पिये जाना आँसू सदा मुस्कुरा के
हँसोगे अगर तुम हँसेगा ज़माना
तुम्हारे ही चर्चे रहेंगे जहाँ में
ये दुनिया अजब है बनाई ख़ुदा ने
यहाँ सब दो चेहरे लिये जी रहे हैं
हैं आँखों में आँसू हँसी होंठ पर है
ज़हर और अमृत पिये जी रहे हैं
सिर्फ़ तुम ही वक़्त की मार सहते नहीं
सिर्फ़ तुम ही दुख दर्द सहते नहीं

ooo

कौन सी ख़ता

ख़ता जाने हमसे ये क्या हो गई है
जुदा हमसे परछाइयाँ हो गई हैं

किसी से नहीं अब शिकायत है हमको
जब अपना ही साया न जाने है हमको

अजब नाते रिश्ते बनाये ख़ुदा ने
जो कल तक थे अपने हुए अब जुदा हैं

ये जीना भी अब तो सज़ा बन गया है
ज़हर पीना ही अब दवा बन गया है

चलन सारी दुनिया का बदला-सा लगता
ख़ुशी चैन का नाम सपना-सा लगता

कहाँ सारे एहसास गुम हो गए हैं
कहाँ सारी सच्चाइयाँ खो गई हैं

ख़ता जाने हमसे ये क्या हो गई है
जुदा हमसे परछाइयाँ हो गई हैं

ooo

साँस का आना

ज़िन्दगी उड़ गई धुआँ बनकर
मौत आ जाये अब दुआ बनकर
वक़्त यह आज कैसा आन पड़ा
मेरा सुख चैन नींद ले के उड़ा
छाये काले अँधेरे राहों में
इक ख़लिश-सी भरी निगाहों में
सब्र कितना करे कोई
जब्र कितना करे कोई
कोई संगी न कोई साथी है
ज़िन्दगी धुँध में गँवा दी है
दिल को घेरे हुए हैं सन्नाटे
पल में काले अँधेरे घिर आते
ज़िन्दगी मोड़ पर गई है ठहर
ज़िन्दगी से ज़िन्दगी
गई है बिछड़
ज़िन्दगी सिर्फ़ साँस का आना
आती रहती है वो भी
रह-रहकर
ज़िन्दगी उड़ गई धुआँ बनकर
मौत आ जाये अब दुआ बनकर

ooo

बेवफ़ा

ज़िन्दगी भर आँसुओं से
हम जिन्हें पूजा किए
मुँह फिरा कर चुपके-चुपके
एक दिन वो चल दिए
क्या सिले मेरी वफ़ा के
बेवफ़ा तुमने दिए
जो दिए हैं ज़ख़्म तुमने
कौन अब उनको सिए
तुम बता जाते तो हमको
क्या गुनाह हमने किए
टूटते विश्वास लेकर
कब तलक कोई जिए
ये भी जीना है भला जीना कोई
बेवफ़ा निकला वही
जिसके लिए हैं हम जिए
कैसे भूलें जीते जी उनको भला
ज़िन्दगी भर जो ज़हर हमने पिए

○○○

बेरहम

वह बहुत दयावान है
सब पर मेहरबान है
हाँ वह भगवान है
उसने हमें बहुत कुछ दिया
बदले में हमसे कुछ नहीं लिया
हमने उसे दयानिधान नाम दे दिया
लेकिन उससे कुछ शिकायतें भी हैं
ये उसने कैसी इनायतें की हैं
ये आँख, दिल, दिमाग़ को कैसी हिदायतें दी हैं
सोचने के लिये दे दिया दिमाग़
सहने को दे दिया दिल लाजवाब
और रोने को दे दी आँसू भरी आँखें
अरे देने वाले क्यों दिया इतना ग़म
कि आज मैं पुकार उठी तुझे बे-रहम

ooo

जितना नसीब था

कभी रो के कुछ भी न पा सके
कभी हँस के सब कुछ खो दिया
कभी उससे कोई गिला नहीं
सब ठीक उसने है जो दिया

मिला उतना जितना नसीब था
भला इसमें किसी की क्या है ख़ता
लिखा कितना किसके नसीब में
मिला आजतक है किसे पता

कोई कितने ही शिकवे गिले करे
चले वक़्त अपनी ही चाल से
क्या शिकायतें ग़मो दर्द की
मैं तो ख़ुश हूँ अपने ही हाल से

ooo

चंद लम्हे

चंद लम्हे जो दिये हैं तुमने
मेरे हिस्से के लिये
बस यही बहुत है
मेरी ज़िन्दगी के क़िस्से के लिये
जितना तुमने दिया
बहुत है दिया
और की चाह तो नहीं मुझको
जो दिया
उसको छीन मत लेना
बस यही इक सलाह है तुमको
वरना दुनिया का
प्यार से विश्वास भी उठ जायेगा
फिर कोई
प्यार पे सबकुछ लुटाने के लिये
प्यार में अंधा होकर
आगे नहीं आयेगा

ooo

कौन-सा नाता

जो भी तूने ख़ुशी से दिया
मैंने उसे ले ख़ुशी से लिया
मगर तेरा देना भी बड़ा अजब है
कभी-कभी लेने में लगता ग़ज़ब है
पता नहीं लगता
यह वरदान है या अभिशाप है
कभी लगता पुण्य है
कभी लगता पाप है
ये तेरे देने और मेरे लेने में
कैसे नाते हैं
कभी हृदय में
कुछ प्रश्न उभर आते हैं
देना तेरा अधिकार और लेना मेरा अधिकार है
फिर क्यों कभी प्यार की थपक
और कभी प्रबल प्रहार है
मैं तो तेरे द्वार की याचिका हूँ
तू मेरा साध्य, मैं तेरी साधिका हूँ
मैं तेरे हर रूप की उपासिका हूँ
तू मेरा कान्हा मैं तेरी राधिका हूँ
फिर क्यों तू कभी उदार और कभी अनुदार है
जीवन में कभी वीरानी, कभी बहार है
तेरे मेरे बीच यह कौन-सा नाता है
जो कभी हँसाता है, कभी रुलाता है
अब कुछ न कहूँगी
मुँह सी लिया
जो भी तूने ख़ुशी से दिया
मैंने उसे ले ख़ुशी से लिया ○○○

आघात

कई रात बरवट बदलते रहे हम
केरे झूठ से ही बहलते रहे हम

कई बार सोचाा ये दुनिया है धोखा
किसी पर यूँ कैसे करें हम भरोसा

मगर फिर न जाने क्यों विश्वास जागा
अँधेरा हृदय का कहीं दूर भागा

जला स्नेह का दीप अन्तर में मेरे
जगी ज्योति पावन सी जीवन में मेरे

मगर मैंने प्रतिदान तुमसे न पाया
हृदय पर भयंकर सा आघात पाया

ये तुमने लिया कैसा बदला है मुझसे
नहीं ऐसी आशा कभी की थी तुमसे

केरे स्नेह का दीप तुमने क्यों तोड़ा
मेरी ज़िन्दगी को कहीं का न छोड़ा

बुरे देख सपने दहलते रहे हम
कई रात करवट बदलते रहे हम

ooo

सन्नाटा

मैं खड़ी
दुनिया के मेले में अकेली
क्या झेली हैं कभी तुमने
ऐसी तन्हाइयाँ
मैं दुनिया के ताने सुनकर भी
चुप हूँ
क्या सही हैं कभी तुमने
रुस्वाइयाँ
फूल चुभ रहे हैं काँटे बन
खो गई मेरी
महकती अमराइयाँ
मेरा सुख, चैन, मेरे हृदय की ख़ुशी
निगल गईं
कौन सी गहराइयाँ
गीत-संगीत बदले रुदन में सभी
चुप हो गईं
बजती शहनाइयाँ
कैसा सन्नाटा
डसे जा रहा है मुझे
तज गई मुझको
मेरी ही परछाइयाँ

○○○

साधिका

गर तुम्हें कोई शिकायत है
मुझे आकर कहो
पर मेरी प्यासी निगाहों से
न तुम ओझल रहो
है कोई अधिकार तुम पर
सत्य यह तुम जानते
क्यों न मेरा प्राप्य देकर
मुझको अपना मानते
जन्म जन्मांतर से मेरे
तुम रहे आराध्य हो
मैं समर्पित साधिका
तुम नाथ मेरे साध्य हो
बिन तुम्हारे मैं तड़पती
मीन जैसे जल बिना
धैर्य दो मेरे हृदय को
मुझको लो अपना बना
मुझसे बोलो या न बोलो
सामने मेरे रहो
मेरी इन प्यासी निगाहों से
न तुम ओझल रहो

○○○

अपनों का अपनापन

ठोकरें दे के वो मुस्कुराते रहे
ठोकरें खा के हम मुस्कुराते रहे

कैसा अपनों का ये अपनापन दोस्तो
हारते हम रहे वो हराते रहे

हम उन्हें अपना कहकर बहलते रहे
वो हमारी हँसी ही उड़ाते रहे

कैसी दे दी ज़माने ने रुस्वाइयाँ
ख़ुद को ख़ुद ही से हम तो डराते रहे

हम वफ़ा का ही मतलब समझ न सके
कैसे क़िस्से वो हमको सुनाते रहे

बेवफ़ाई सभी ने करी हमसे फिर
बेवफ़ा वो हमीं को बताते रहे

○○○

शान्त

कभी-कभी मेरे अन्दर धधकता लावा
बूँद-बूँद मेरी क़लम से उतर कर
काग़ज़ पर फैल जाना चाहता है
मेरी आँखों से झरझर झरते आँसू भी
उस लावे को ठंडा नहीं कर पाते
मेरे उफनते अहसासों पर
मेरी पिघलती भावनाओं पर
अंकुश नहीं लगा पाते
मस्तिष्क में
भूत, भविष्य, वर्तमान का सामंजस्य
गड्डमड्ड होने लगता है
हृदय भाँति-भाँति की अनुभूतियों
भावनाओं और संवेदनाओं से
विदीर्ण होने लगता है
यह अशान्त तूफ़ान
न अन्दर जाता है
न बाहर आ पाता है
ऐसे में एक अदृश्य शक्ति
मेरे हृदय और मस्तिष्क के उतर कर
क़लम की नोंक तक आती है
कुछ क्षण में मेरे अन्दर समाहित
सारे तूफानों को
काग़ज़ तक पहुँचाकर
मुझे शान्त कर जाती है

○○○

अनोखा मेल

जीवन एक अनोखा मेला
हर अभिनेता आकर जिसमें
खेले अपना-अपना खेला
भाँति-भाँति का अभिनय करते
क्षण में जीते क्षण में मरते
सुख-दुख के दिन आते-जाते
पल में रोते पल में गाते
मानव विधि का एक खिलौना
कभी हँसी है कभी है रोना
बरस दर बरस बीत रहे हैं
हम जीवन से रीत रहे हैं
भूल जायेगा मानव सबकुछ
क्या-क्या पाया क्या-क्या झेला
छोड़ के दुनिया दुनियादारी
चला जायेगा दूर अकेला
दुनिया के इस रंगमंच पर
मानव खेल रहा है खेला
पर्दा गिर जायेगा इक दिन
भूल जायेगा मेला-ठेला

ooo

अविकार

इन्सान का जीवन
सिर्फ़ भावनाओं का शिकार है
जीवन में अच्छा बुरा
अपना पराया
ख़ूबसूरत बदसूरत कुछ नहीं होता
यह तो सिर्फ़ इन्सान की
नज़र और समझ का विकार है
सोचने समझने की क्रिया
किसी बात की प्रतिक्रिया
बात किस हद तक बढ़े
क्रोध या स्नेह कहाँ तक चढ़े
मिठास इतनी न बढ़े कि खटास आ जाये
संबंध ऐसे रहें कि सुवास आ जाये
अगर मानवीय संवेदनाओं पर
मस्तिष्क का भी अधिकार है
तो निश्चय ही
जीवन की लम्बी राह
अविकार है

ooo

यादों की रेल-पेल

भूली बिसरी यादें आकर
जाने क्या-क्या कह जाती हैं
कभी हँसाती कभी रुलातीं
कभी शून्य-सा भर जाती हैं
यादों के आते हैं रेले
यादों के बन जाते मेले
यादों के घिर आते बादल
यादें कर जाती हैं पागल
यादें आकर तड़पाती हैं
यादें मन को तरसाती हैं
यादें आतीं कभी सुहानी
बनकर मीठी मधुर कहानी
यादें कभी सताने आतीं
यादें कभी रुलाने आतीं
यादें कभी आयें बेरंगी
यादें कभी आयें सतरंगी
यादों के बन जायें झरोखे
याद आयें जो खायें धोखे
यादें पल-पल बदलें रंग
यादों में छिड़ जाती जंग
यादों की इस रेल-पेल में
जीवन नैया बहती जाती
यादों की ये घनी आँधियाँ
जाने क्या-क्या हैं कह जातीं

○○○

भयग्रस्त

कितनी आहें कितने आँसू
छिपे हुए हैं इस जीवन में
बड़ा कठिन है पल-पल मरना
पल-पल जीना इस जीवन में
कुछ पल ऐसे भी हैं आते
दिग्विमूढ़ हो जाता मानव
दिशाहीन पथभ्रष्ट पथिक सा
लक्ष्यहीन बन जाता मानव
कुछ ख़ुशियों के पल भी आते
पर भयग्रस्त हृदय रहता है
छीन न ले कोई ख़ुशियों के
क्षण-क्षण त्रस्त हृदय रहता है
सुख-दुख के ताने-बाने में
रहता किसका पलड़ा भारी
यही तौलता रहता मानव
ऊपर बैठा हँसे मदारी
पर क्यों मरता पल-पल मानव
क्यों डरता है हर क्षण मानव
जब तक जीना सुख से जी ले
निश्चित एक मृत्यु जीवन में
सत्य सभी पर यह उद्घाटित
फिर क्यों रोज़ मरें जीवन में
भय आहें दुख दर्द भुलाकर
अर्जित करें शान्ति जीवन में

○○○

जब कोई याद

जब कोई याद
चुपके से आकर
हृदय में कुछ बोल जाती है
विस्मृति की चादर
धीरे से उठ जाती है
मन में किसी की
याद डोल जाती है
कुछ क्षण को स्मृति
जीवन की कड़वाहट
मधु में बदल कर
अन्तर के सागर में
अमृत-सा घोल जाती है
हृदयतन्त्र झंकृत कर
यादों की बारात
एक-एक याद को
तौल-तौल जाती है
किसको भूलूँ
किसको याद करूँ
हर याद आकर
दिल को टटोल जाती है
बचपन जवानी
और अन्तिम बुढ़ापा
सब कुछ खड़ा है
सामने सरापा
हर याद जीवन को
खोल-खोल जाती है

○○○

आगे चले आओ

बन्धु!
मेरे थके कंधों को
तुम्हारे कंधों की ज़रूरत है
आओ चले आओ
जीवन में
बहुत कुछ खोया
बहुत कुछ पाया
किन्तु आज
जीवन में सिर्फ़ शून्य है
आओ चले आओ
तुम्हारा जाना
एक अकल्पनीय आघात
आज दिल तुमसे चाहता
एक छोटी-सी सौगात
आओ चले आओ
हम तो हैं
अतीत के भग्नावशेष
बहुत थोड़े दिन
जीवन के शेष
फिर भी अभी
कुछ प्रश्न अनुत्तरित हैं
आओ चले आओ

○○○

ज़िन्दगी फिसल जाती है

हर नया मौसम
नया लिबास पहना जाता है
हर नया मौसम
हमें कुछ ख़ास बना जाता है
बदलते मौसमों के
बदलते कपड़ों के साथ
हम ख़ुद भी बदल जाते हैं
नये मौसम के
नये कपड़ों को पहन कर
बच्चों से बहल जाते हैं
हर नया मौसम
कुछ नये रंग लाता है
कभी दर्द कभी उदासी
कभी नई उमंग लाता है
बारी-बारी से हर मौसम
आता है चला जाता है
हर मौसम इन्सान पर
कुछ निशान छोड़ जाता है
मौसम की इस अदल-बदल में
ज़िन्दगी निकल जाती है
धूप, हवा, बारिश को
पकड़ते-पकड़ते
ज़िन्दगी न जाने कब
हाथों से फिसल जाती है

○○○

सन्तुलन बिन्दु

अतीत के ख़ज़ानों के मोती
कहीं गहरे सागर में जाकर
छिपकर बैठ गये हैं
उन्हें ढूँढने जाओगे
तो ख़ुद भी खो जाओगे
तब तक तुम्हारा वर्तमान
यह सुन्दर महकता वर्तमान
अतीत बन जायेगा
अतीत के खण्डहरों में भटकते-भटकते
कहीं वर्तमान भी
खण्डहरों में न बदल जाये
भूलने और भुलाने की
भूलभुलैया में भटक-भटक कर
ज़िन्दगी रेत की तरह
मुट्ठियों में से फिसल जायेगी
उन बीते पलों की यादों में
वर्तमान को मत भुलाओ
अतीत और भविष्य की
अनजानी राहों में
एक जानी पहचानी राह
वर्तमान ही है
अतीत और भविष्य के बीच का
सन्तुलन बिन्दु
वर्तमान ही है

ooo

आत्माओं के बन्धन

जीवन के दर्शन का सार
बहुत संक्षिप्त है
कहीं एक ज्योति ने
नवजीवन से ज्योतित होकर
गर्व से सिर उठाया
कहीं दूसरी ने बुझकर
विधि के सम्मुख शीश झुकाया
जीवन की परिभाषा
बहुत सरल है
डाली पर एक
नवपुष्प विकसित हुआ
दूसरा टूटकर गिरा
धूलि धूसरित हुआ
जीवन का सबसे बड़ा सच
सबके लिये एक है
जीवन के बाद मृत्यु
मृत्यु के बाद जीवन
इसी चक्र में बँधे रहते हैं
युग युगान्तर तक
आत्माओं के बन्धन

ooo

निन्यानवे के फेरे

मेरे मित्र!
क्यों उलझा रहे हो जीवन को
अनचीन्ही अनजानी उलझनों में
उलझनों के ये घेरे
जो अपनी आकाँक्षाओं को बढ़ाकर
तुमने ख़ुद ही बनाये हैं
तुम्हें कभी मुक्ति नहीं देंगे
क्योंकि आकाँक्षाओं का
कोई अन्त नहीं होता
क्यों न हम ख़ुद को नियन्त्रित करें
और सुख शान्ति को आमन्त्रित करें
सादा जीवन उच्च विचार को अपनायें
अपनी इच्छाओं पर अंकुश लगायें
जीवन की लम्बी डगर में
बहुत कुछ करना है
किन्तु इच्छाओं को मार कर
पल-पल नहीं मरना है
कहावत है
जितनी चादर हो
उतने लम्बे पाँव पसारो
अपनी चादर लम्बी करो
परिश्रम करो कर्म करो
संतोष को परमधर्म समझो
इच्छाओं के विषजाल में मत उलझो
क्यों पड़ते हो निन्यानवे के फेरे में
क्यों उलझा रहे जीवन को
उलझनों के घेरे में
○○○

बेसुरा शोर

यह कैसा शहर है
जहाँ शोर
सिर्फ़ शोर सुनाई देता है
इर इन्सान चीख़ता चिल्लाता दिखाई देता है
फिर भी एक अजीबसा सन्नाटा है
कुछ लोगों के मुख पर चुप्पी का मुखौटा है
एक तरफ़ जहाँ शोर का आलम है
दूसरी तरफ़ ऐसी चुप्पी जैसे मातम है
कहीं से गाने की आवाज़ भी आ रही है
पता नहीं वह क्या गा रही है
सारे शोर में मिलकर
गाना भी शोर सा लग रहा है
प्रकृति से मुँह मोड़कर
मानव क्यों ख़ुद को ठग रहा है
इन कर्णभेदी चीख़ों के बीच
कोई कोयल कैसे गीत गायेगी
गम्भीर मुखौटों के साये तले
भोली मुस्कान कैसे मुस्कुरायेगी
यह कैसा शहर है
जहाँ भँवरे गुनगुनाते नहीं
जुगनू जगमगाते नहीं
पत्ते सरसराते नहीं
हवाओं के झोंके लहराते नहीं
न कूकती है कोयल
न नाचता है मोर
सब तरफ़ गूँजता
एक बेसुरा शोर
○○○

भीड़ का हिस्सा

मैं ख़ुद को भूल बैठी हूँ
दुनिया की इस भीड़ में
मैं कौन हूँ?
मेरा अस्तित्व क्या है?
मेरा व्यक्तित्व क्या है?
सारे प्रश्न नगण्य हैं
इस समय मैं
सिर्फ़ इस भीड़ का एक हिस्सा हूँ
भीड़ के इस मेले में
सब साथ होते हुए भी अकेले हैं
कबीर के जल बीच प्यासे मरते
धोबी की तरह नितान्त अकेले
सब भीड़ बने हुए हैं
ख़ुद को भूल कर
तेरी मेरी इसकी उसकी
बातों में झूल कर
चलते जा रहे हैं रेले में
दुनिया के मेले में
मैं भी इस भीड़ में खो चुकी हूँ
अपना नाम
अपनी अनुभूतियाँ
अपने अहसास
अपने अतीत, भविष्य
और वर्तमान का सारा इतिहास
मेरी अपनी कोई कहानी नहीं
मैं सिर्फ़ इस भीड़ में
बनता हुआ एक क़िस्सा हूँ

○○○

गाँठ लगी तार

रिश्तों के टूटने और जुड़ने के बीच
सिर्फ़ एक तार होता है
तार जुड़ा तो रिश्ता जुड़ा
तार टूटा तो रिश्ता टूटा
रिश्तों के तार
टूटने और जुड़ने के बीच
सबकुछ निराकार है, अप्रत्यक्ष है, अदृश्य है
फिर भी कितना साकार है
मानवीय अनुभूतियाँ
संवेदनायें और भावनायें मिलकर
दो साक्षात, दो साकार लोगों को
एक अदृश्य तार से जोड़ देती हैं
उनके व्यवहार और विचार
एक दिशा में मोड़ देती हैं
रिश्तों के ये अनदेखे तार
फ़ौलाद से भी अधिक दृढ़ हो जाते हैं
इन तारों से बँधे लोग
जब तक अपने हृदय और मस्तिष्क
बुद्धि और भावनाओं के बीच सन्तुलन रखते हैं
ये तार जुड़े रहते हैं
जिस दिन अतिरिक्त, अवांछित
बुद्धि या भावनाओं का भार बढ़ा
तारों का सन्तुलन बिगड़ा
तो रिश्ते के नाज़ुक तार
टूटने में देर नहीं लगेगी
फिर कितना ही जोड़ो
गाँठ लगी तार कच्ची ही रहेगी ○○○

ताश के महल

ये मेरा दिल यूँ घुट-घुटकर क्यों रोता है
जो होता है क़िस्मत में वह क्यों होता है
जीवन में तूफ़ान हज़ारों क्यों आते हैं
जिनमें इन्सानों के सपने बह जाते हैं
जाने क्यों किस अनजाने सुख की आशा में
कितने शूलों की नोकें हम सह जाते हैं
कितना ही चुप रहें लाख मन को समझायें
जाने अनजाने हम क्या-क्या कह जाते हैं
भर जाते हैं ज़ख़्म हुए हों कितने गहरे
फिर भी दाग़ हमेशा उनके रह जाते हैं
कितने महल दुमहले बनते हैं सपनों में
सभी ताश के महलों से वो ढह जाते हैं
जीवन के इस चक्रव्यूह में
कुछ पाता है कुछ खोता है
छोटे से मानव जीवन में
जाने सब कुछ क्यों होता है

○○○

आज भर की आस

क़तरा क़तरा आँखों से
बहती रही ज़िन्दगी
बूँद बूँद ज़िन्दगी को
सहती रही ज़िन्दगी

आए जब तूफ़ान और
पैरों तले धरती हिली
सिर उठा तूफ़ान में
बढ़ती रही ज़िन्दगी

जब कभी टूटे
सपनों के ताजमहल
इक नई इमारत
गढ़ती रही ज़िन्दगी

छूटी जब हाथों से
डोरी अरमानों की
कुछ नए काम तब
करती रही ज़िन्दगी

पल भर की ज़िन्दगी को
गुज़र ही जाना है
समझा कर ख़ुद को
कहती रही ज़िन्दगी

भूत और भविष्य की
चिन्ता की चिता पर
आज भर की आस पर
जीती रही ज़िन्दगी

○○○

यादों की मुरली

घुल जाए मेरे गीतों में
बाँसुरिया तेरी यादों की
नहीं भुलाने की ज़िद करना
याद कभी जब आए तुमको
मुझसे किए गए वादों की
आएगी जब-जब पुरवाई
मेरे गीतों को लायेगी
पुष्प गन्ध भ्रमरों की गुन-गुन
मेरी बातें कह जायेंगी
जब-जब महकेगी सुगन्ध
सोंधी माटी की
सावन की रातों में तुमको
याद आयेंगी
मेरी स्नेह भरी थाती की
मुस्कुराए जब झाँक-झाँक
बादल से बिजली
प्रियतम दूर कहीं बजती होगी
मीठी यादों की मुरली
रखना सदा सँभाले मेरी
यादों का यह प्रेम ख़ज़ाना
मेरे गीतों को हवाओं के
झोंकों से तुम सुनते जाना

○○○

कितना पानी बहा नदी में

आते हैं दिन
जाते हैं दिन
बीत रहे जीवन के पल छिन
कितना पानी बहा नदी में
कितने दिन रह गए सदी में
करवट बदल-बदल कर कितनी
रातें हैं जीवन की बीतीं
कितनी रातें बैठ ज़िन्दगी
ज़ख़्म अकेले अपने सीती
कितने अपने और पराये
इसकी गणना कौन बताये
एक-एक कर संघर्षों में
रहे उलझ कर
सुलझ न पाए
जीवन के ताने-बाने के
तारों में है कितनी उलझन
कितने बरस बिता डाले हैं
सूरज चंदा तारे गिन-गिन

ooo

नहीं सवेरा

मैंने तुमको नहीं कहा था
तुम मेरे सपनों में आओ
पल भर झलक दिखा
छुप जाओ
मुझे सताओ
मेरी सुधियों के आँगन में
क्यों तुम आए
क्यों तुमने मेरे
सुख स्वप्न चुराये
कौन बताये
क्यों यादों के भरे ख़ज़ाने
जो आ जाते
कभी हँसाने
कभी रुलाने
तुम अतीत थे
वर्तमान हो
या भविष्य में
कहीं छुपे हो
उलझ गया
कैसी उलझन में
जीवन मेरा
घोर अँधेरा
नहीं सवेरा
○○○

तुम्हें भुला न पाये

तुमने हमको नहीं भुलाया
हम भी तुम्हें भुला न पाये
फिर क्यों ऐसी बनीं दूरियाँ
दिल का हाल सुना न पाये

कुछ बातों पर अड़े रहे तुम
कुछ दूरी पर खड़े रहे तुम
लम्हा भर की जो दूरी थी
बरसों में हम मिटा न पाये

करीं चाँद तारों से बातें
तारे गिन-गिन काटी रातें
कैसा छाया अन्धकार है
कोई ज्योति मिटा न पाये

बन्धु मिले थे हम तुम ऐसे
जैसे नदी मिले सागर से
जीवन के मेले में बिछड़े
ऐसे कभी न फिर मिल पाये

भड़का कैसा यह दावानल
भस्म हुआ जिसमें जग मेरा
आग लगी ऐसी अनबुझ-सी
कोई नीर बुझा न पाये

एक क़दम भर की जो दूरी
बदल गई जाकर मीलों में
ऐसे लम्बे बने फ़ासले
कभी नहीं जो कम हो पाये

ooo

अन्तहीन घेरों में

क्यों मेरी ज़िन्दगी
सवालों और जवाबों का
जंगल बनकर रह गई है
सवाल
जिनकी गिनती नहीं
जवाब
जो कभी मिलेंगे नहीं
मेरे दिल और दिमाग़ में
सवालों की आँधियाँ
चलती रहती हैं
जवाब ढूँढती रहती हैं
पर जवाब के जवाब में
कुछ नये सवाल खड़े हो जाते हैं
मैं कब तक
अपने अनुत्तरित प्रश्नों के
घेरे में घूमती रहूँगी
जिसका कोई अन्त ही नहीं
मैं इन बेजान
बेज़बान सवालों के बोझ तले
दबती जा रही हूँ
और शायद इन से दब कर
एक दिन
ख़ुद एक सवाल बन जाऊँगी

ooo

उलझे सुलझे सपने

ये रेशम की डोरी से
सुलझे सपने
ये उलझे बालों से
उलझे सपने
जो पूरा हो जाये सपना
लगे अपना
सजीव चित्र-सा
बन्धु मित्र-सा
जो नींदों में आकर
ख़्यालों में छा कर
आ गये सामने
सच हुए सपने
बन गए अपने
जो सपने आए
ख़्यालों में समाये
दिल को कुछ नये
रंग दिखलाये
पर आये नहीं सामने
मेरा हाथ थामने
दूर से लगे अपने
पास आये सताने
याद आये जी को जलाने
तो बन गये
बुरे सपने
कैसे हैं ये सपने
कभी बालों से उलझे
कभी रेशम से सुलझे

ooo

गीत

क्यों जा रहे हो मेरे इस दिल से दूर-दूर
क्यों कर रहे हो मेरे इस दिल को चूर-चूर

तुमने हमें लुभाया ये दोष था तुम्हारा
फिर क्यों सज़ा है पाता बेचारा दिल हमारा
देखा क्यों तुमने हमको आँखों में भर सुरूर

दिल मर मिटा तुम्हारी आँखों की उस अदा पर
कैसे सिला दिया है तुमने हमको सता-सताकर
सुन लो हमारे दिल की ऐसा भी क्या ग़ुरूर

दिल पूजता है तुमको दिल की है क्या ख़ता
क्यों मिल रही है दिल को इसकी कड़ी सज़ा
दिल पूछता है तुमसे मेरा है क्या क़ुसूर

क्यों जा रहे हो मेरे इस दिल से दूर-दूर

○○○

जीने के संघर्ष में

ज़िन्दगी को आज
ज़िन्दगी से कुछ कहना है
बताओ
मुझे कब तक तुम्हारे साथ
जीने का दर्द सहना है
कब तक ज़िन्दगी को
ज़िन्दगी के इशारों पर जीना है
कब तक जीने का ज़हर
ज़िन्दगी को पीना है
प्रश्न तो तुमको
बहुत से हैं सुलझाने
पर तुमने तो उलझा रखे
ज़िन्दगी के ताने-बाने
ज़िन्दगी कैसा उपहास
ज़िन्दगी से करती है
जीने के संघर्ष में रोज़
अपने ही हाथों मरती है

ooo

उठो वीर

उठो वीर जागो निद्रा से
माँ ने तुम्हें बुलाया है
देखो कोई भारत माँ का
चैन छीनने आया है

भारत माँ का मुकुट हिमालय
कोई न देखे उसकी ओर
हिन्द महासागर चरणों में
जिसका कोई ओर न छोर

पूरब-पश्चिम उत्तर-दक्षिण
जहाँ तलक हैं सीमायें
सावधान रहना सीमा पर
कोई चोर न आ जायें

कोई पड़ोसी भाई कहकर
धोखा जब दे जाता है
पीड़ा से दिल फट जाता है
यह कैसी मानवता है

वीर प्रेम विश्वास रहे
पर आँखें सदा खुली रखना
विश्वासों पर घात
क्रूर अन्याय कभी तुम न सहना

पूर्ण देश है साथ तुम्हारे
सबकी दुआ तुम्हारे साथ
बढ़ो क़दम से क़दम मिलाकर
बढ़ो मिला हाथों से हाथ

ooo

कल्पना और यथार्थ

कभी-कभी
मेरे अन्दर
कल्पनाओं का ज्वालामुखी
धधक कर फूटता है
उसमें से लावे की तरह
मेरा एक सपना निकलता है
स्वयं को, परिवार को
संसार को बदल देने का सपना
अलग-अलग रंगों के सपने
जब-तब आते रहते हैं
फिर एक दिन
हर सपना
यथार्थ की धरती पर आता है
धधकर कर, गिरकर, फूटकर
ठंडा हो जाता है
मैं भी कल्पनाओं के आकाश से
यथार्थ की धरती पर आकर
उस ज्वालामुखी को समेटकर
आत्मसात् कर लेने की
कोशिश करती हूँ
कल्पना और यथार्थ को
समझने की कोशिश करती हूँ

ooo

सपने सुनहरे

हम चलें उजालों की ओर
दूर करें अँधेरे
अपनायें मार्ग सत्य का
उड़ जायें असत्य के बादल घनेरे
अगर कभी मंज़िलों के रास्ते खो जायें
लक्ष्य के पथ से हम भटक जायें
चौराहे बीच खड़े सोचें किधर जायें
जीवन के हर पल पर लग जायें
दुर्भाग्य के पहरे
ऐसे में रुकना नहीं
ऐसे में झुकना नहीं
ऐसे में थकना नहीं
सोच लेना अँधेरे कितने ही हों गहरे
हर अँधेरी रात के बाद आते हैं सवेरे
सात घोड़ों के रथ पर
जीवन के सतरंगे चित्र लिये
रोज़ निकलता है सूरज
दूर कर देता है सारे अँधेरे
नई सुबह के साथ लाता है
सपने सुनहरे

○○○

मजबूरियाँ

जब जब मैंने लोगों के क़रीब जाकर
उन्हें अपना समझकर
उन्हें अपनी ज़िन्दगी के क़रीब देखना चाहा
तब-तब मुझे वो लोग
बहुत दूर से लगे
बहुत पराये से लगे
उनके चेहरे बड़े अजीब से लगे
मैंने ख़ुद को समझाना चाहा
शायद यह मेरी नज़र का क़ुसूर है
सभी तो मेरे अपने हैं
कोई नहीं दूर है
ये अपने तो बड़े नसीब से मिले हैं
इनके साथ मेरे जन्मों के सिलसिले हैं
लेकिन जब भी मैंने
उन अपनों की आँखों में झाँककर
उनके हृदय में पहुँचना चाहा
वहाँ कोई राह नहीं थी
कोई चाह नहीं थी
सिर्फ़ थीं दूरियाँ
साथ रहने की मजबूरियाँ

ooo

गीत

कूक उठी कोयलिया मेरी अमराई में
बाज उठी बाँसुरिया मेरी तन्हाई में
बीते कुछ क्षण फिर से
उमड़ घुमड़ आने लगे
यादों के बादल से
अमृत बरसाने लगे
कैसी ये हूक उठी मन की गहराई में
बाज उठी बाँसुरिया मेरी तन्हाई में
मन वीणा एक बार
फिर से झंकार उठी
कुहू-कुहू कोयलिया
जब से पुकार उठी
जीवन रस की फुहार किसने बरसाई रे
बाज उठी बाँसुरिया मेरी तन्हाई में
घुल गया हवाओं में
जीवन संगीत रे
अन्तर में झूम उठे
मीत प्रीत के गीत रे
मुरझाई अमराई किसने सरसाई रे
बाज उठी बाँसुरिया मेरी तन्हाई में

○○○

उन्माद निराला

तब मन मधुशाला बन झूम उठता है
साँसों में हाला-सी घुल जाती है
सुष्टि के कण-कण से मदभरी तरंग आती है
जब पेड़ों से गुज़रती हवा
पत्तों को सरसराती हुई
बाँसुरी-सी बजा जाती है
जब दूर से आती हुई संगीत ध्वनि
कानों की राह पार कर
हृदय में समा जाती है
जब सागर की बलखाती लहरें
आती हैं और -
मेरे चरण छूकर लौट जाती हैं
जब शाम को घर लौटते पक्षियों का कलरव
दिल के तारों को तरंगित कर देता है
जब दूर पहाड़ों के पीछे
छुप-छुपकर जाता सूरज
वादियों में भर देता है अँधेरा काला
विदा लेता है इस वायदे के साथ
कल फिर आयेगा लेकर उजाला
सूरज के पीछे आता चाँद
चाँद के पीछे भागता सूरज
प्रकृति का यह चक्र
भर देता है उन्माद निराला
मेरा पूरा अस्तित्व
बन जाता है मधुशाला

○○○

कैसे जियें ये ज़िन्दगी

कैसे जियें ये ज़िन्दगी टुकड़ों मे बाँट कर
कैसे निभायें ज़िन्दगी कतरन में काट कर

कैसे एक टुकड़ा अपना अस्तित्व बचायेगा
कैसे एक कतरन से अपना व्यक्तित्व बनायेगा

कैसे पायेगा मंज़िल आधा अधूरा
कैसे टुकड़ा-टुकड़ा सोच से स्वप्न होगा पूरा

कैसे बनेगा हर टुकड़े का अलग मुखौटा
कैसे ज़िन्दगी का स्तर हो जाये इतना छोटा

मुझे जीना है यह जीवन पूर्णत्व के साथ
स्वाभिमान से जीना है स्वत्व के साथ

एक पूरी सोच से जियें पूरी ज़िन्दगी
ईश्वर के साथ ज़रूरी है ख़ुद की भी बंदगी

कैसे दिखायें दिल की किताब छाँट-छाँट कर
कैसे जियें ये ज़िन्दगी टुकड़ों मे बाँट कर

○○○

एक चूहे के प्रश्न

एक डरा सहमा-सा चूहा
भयभीत आँखों से
बिल के बाहर झाँक रहा है
सिर घुमाकर देख रहा है
आसपास कहीं कोई इन्सान तो नहीं है
आसपास मेरी मौत का सामान तो नहीं है
कैसा है यह इन्सान
जो धरती के नीचे
धरती के ऊपर उगने वाली
हर चीज़ को
फल-फूल, पत्ते और बीज को
जलचर, थलचर, नभचर
सबको खा सकता है
सब जीवों का
कुछ निश्चित आहार होता है
कुछ निश्चित व्यवहार होता है
पर इन्सान तो सबकुछ कर सकता है
कुछ भी खा सकता है
सबको पचा सकता है
पल में दुष्कृत पल में सुकृत करता है
पल में विष पल में अमृत बनता है
ये सब उसको भगवान का वरदान है
अभिशाप है या उसकी लाचारी है
पर मैं क्या करूँ
कल मेरी चुहिया गई
क्या आज मेरी बारी है?
○○○

विश्वास की नींव

एक विश्वास की नींव पर
मैंने ज़िन्दगी के महल खड़े कर लिये
नींव के हर पत्थर को जोड़ने के लिये
सीमेंट था मेरा विश्वास
महल की हर मंज़िल में
भरी थी तेरी उजास
महक गया मेरा अस्तित्व
मेरे विश्वास की सुगन्ध से
बन गया मेरा जीवन संगीत
तेरे एक-एक छन्द से
तेरे विश्वास का दीपक
जगमगाता रहा मेरे हाथों में
होते गए उजाले जीवन की राहों में
मेरा भाग्य मेरा सौभाग्य
मेरा पाप मेरा पुण्य
मेरे जीवन का प्रत्येक निर्णय
निर्भर है तेरे विश्वास पर
जिस दिन तेरे विश्वास की डोर
छूट गई मेरे हाथ से
शायद उस दिन मेरा जीवन
बिना नींव की इमारत की तरह
धराशायी हो जायेगा

ooo

ज़िन्दगी की कहानी

बड़ी ही अजब ज़िन्दगी की कहानी
कभी है नई और कभी है पुरानी

कभी बरसों पहले की बातें सतातीं
कभी हैं हँसाती कभी हैं रुलातीं

कभी भूलकर दिन गई ज़िन्दगी के
बनाते हैं सपने नई ज़िन्दगी के

बदलते हैं पल-पल में रंगीन सपने
हुए कुछ पराये बने कोई अपने

कभी भूले चेहरों की परछाइयाँ हैं
कभी खोये लम्हों की तन्हाइयाँ हैं

कभी महकते से नये चेहरे आते
कभी चहकते लम्हे जीवन सजाते

कई यादें कड़वी कई हैं सुहानी
बड़ी ही अजब है ज़िन्दगी की कहानी

ooo

इन्सानियत को जीने दो

धर्म-जाति अमीर-ग़रीब
छूत-अछूत ऊँच-नीच
जिस दिन हम
इन शब्दों को भूल जायेंगे
हम वास्तविक मानव बन जायेंगे
से शब्द हमारे दृष्टिकोण को
संकीर्ण, संकुचित बना देते हैं
हमारी सोच को छोटा बनाकर
हमें मानवता से नीचे गिरा देते हैं
प्रेम-प्यार आस्था-विश्वास
सबको बेमानी कर देते हैं
इनके वशीभूत होकर ही हम
अक्षम्य नादानी कर देते हैं
काश हम कहें
जियो और जीने दो
प्रेम से रहो और रहने दो
सिर्फ़ इन्सान बन जाओ
इन्सानियत से जियो
इन्सानियत को जीने दो

○○○

स्वार्थान्ध

क्यों
धर्म और जाति के नाम पर
कुछ लोग
आत्मा परमात्मा
सबको भूलकर
अन्धे हो जाते हैं
लोग उन्हें धर्मान्ध कहते हैं
किन्तु वह कौन-सा धर्म है?
जो लोगों को अन्धा बनाता है
उन्हें गुमराह करता है
नहीं -
कोई धर्म मानव को
दानव बनना नहीं सिखाता
कोई धर्म किसी प्राणी के प्रति
अत्याचार करना नहीं सिखाता
ये लोग धर्मान्ध नहीं
स्वार्थान्ध होते हैं
ये अपने स्वार्थ की दुर्गन्ध
भर देते हैं
कुछ भोले लोगों के दिल और दिमाग़ में
और उन्हें बलि का बकरा बनाकर
चढ़ना चाहते हैं सत्ता की सीढ़ियों पर
वर्तमान का ख़ून
जोंक की भाँति चूसकर
राज करना चाहते हैं
पीढ़ियों तक पीढ़ियों पर
○○○

जब आँख खुलती है

क्यों कभी-कभी हम
दूसरों से नहीं
अपने आप से डर जाते हैं
और अपने ही हाथों घुटकर
एक अनदेखी
अनजानी मौत मर जाते हैं
कैसे-कैसे खेल
खेलती है ज़िन्दगी हमसे
जिसे अमृत समझ कर पीते हैं
वो ज़हर होता है
जाने कहाँ-कहाँ से आ-आकर
कुछ लम्हे
कभी दिल पर कभी पलकों पर
ठहर जाते हैं
न उन्हें भुला पाते हैं
और न बुला पाते हैं
ज़िन्दगी का ये कैसा क़हर होता है
जाने कब फिसल जाती है ज़िन्दगी
हाथों से रेत सी
जब आँख खुलती है
तो ज़िन्दगी का
आख़िरी पहर होता है

○○○

कुछ सपने देखे थे

खुली आँखों से
कुछ सपने देखे थे
आँखें बंद करते ही
सब अँधेरों में डूब गए
हम फूलों पर चलते-चलते
अचानक ही काँटों पर कूद गए
कुछ काँटे निकल गए
कुछ गड़े रह गए
काँटे निकालने की कोशिश में
हम विभ्रान्त से खड़े रह गए
इस नाकाम कोशिश में
घाव और गहरा गए
खुली बंद आँखों के सारे सपने
ज़िन्दगी में लहरा गए
सपनों के साथ-साथ
दर्द बढ़ता गया
ज़िन्दगी में रोज़
एक नया काँटा गड़ता गया
फिर एक दिन
टूटते सपनों के साथ
हम भी टूट गए
सपनों में ज़िन्दगी की ढूँढते हुए
एक दिन हम ज़िन्दगी से ऊब कर
खुद सपना बनकर
सपनों में डूब गए
○○○

उसे सोने दो

वह सो रहा है
एक लम्बी गहरी नींद में
ऐसी नींद
जो सैकड़ों हज़ारों साल
या कई युगों तक रहे
या शायद कभी खुले ही नहीं
उसे सोने दो
क्यों चिल्लाकर, रोकर
पुकार-पुकार कर
उसकी नींद में
विघ्न डालकर
उसे जगाना चाहते हो
नहीं, वह नहीं उठेगा
जीवनभर अन्याय अत्याचार
अपनों का दुर्व्यवहार सहते हुए
घुट-घुटकर मरते हुए
मर-मरकर जीते हुए
दिल पर लगे घाव सिलते-सिलते
कब वह थककर सो गया
उसे खुद भी पता न चला
देखो वर्षों के बाद आज
उसके चेहरे पर कितनी शान्ति है
सब कष्टों से छूट जाने की शान्ति
अब न कोई दुविधा न कोई भ्रान्ति
न कोई मोह न आसक्ति
सोने दो
उसे सोने दो चिरनिद्रा में
○○○

मुट्ठियों में क़ैद तूफ़ान

जीवन की इस साँध्य वेला में
जीवन के सारे कटु अनुभव भुलाकर
शान्ति की खोज में लिप्त होकर
अपने एकाकीपन में तृप्त होकर
जिस सत्य को ढूँढ रही हूँ
क्या उस सत्य से
मेरा साक्षात्कार हो पायेगा
मैं स्वयं पर
कितना नियन्त्रण रख पाऊँगी
मेरा जीवन तो
एक भयंकर झंझावात रहा
मैंने सारे बवंडर
सारे तूफ़ान
बंद कर लिये कसकर हथेलियों में
ख़ुद को भुला दिया
अनसुलझी पहेलियों में
अब मेरी अन्तिम इच्छा या मेरी परीक्षा
सिर्फ़ एक प्रार्थना है ईश्वर से
मेरी मुट्ठियों में क़ैद तूफ़ान
मेरे साथ ही विदा हो जायें
जीवन की इस साँध्य वेला में
ये मुट्ठियाँ खुल न जायें
बिखर न जायें किसी के सामने
जीवन की गुत्थियाँ
बंद ही रह जायें सदा के लिये
तूफ़ानों को दबाये ये मुट्ठियाँ

ooo

पुराने गिले शिकवे

भुला कर पुराने गिले और शिकवे
चलो दोस्त बन जायें फिर से नये हम

सुना मन में अपने छुपी सारी बातें
ख़तम कर लें अपने दिलों के सभी ग़म
न दोहरायें बीते दिनों की कहानी
शुरू फिर से कर लें सुबह इक सुहानी

अगर भूल जायेंगी बातें पुरानी
तो हमको मिलेगी खुशी इक रूहानी
चलो प्यार का इक समन्दर बहा दें
नदी प्रेम की सबके अन्दर बहा दें

ये नफ़रत जलन और झगड़े लड़ाई
नहीं इनसे मिलती किसी को बड़ाई
ख़तम कर दें अपने दिलों से ये बातें
तो सोने के दिन होंगे चाँदी की रातें

सुकूँ के समन्दर में खायेंगे गोते
नहीं काटेंगे रात दिन रोते-रोते
जो मन में नहीं हों गिले और शिकवे
तो मन में रहेगा बड़ा चैन हरदम

भुला कर पुराने गिले और शिकवे
चलो दोस्त बन जायें फिर से नये हम

ooo

रिश्तों के जाल

आज मैं चली हूँ रिश्तों के जाल तोड़ने
जो मैंने ख़ुद बुने थे
अपने ही हाथों अपने लिये चुने थे
चुन लीं थीं कुछ उलझनें
बुन लिये थे कुछ जाल
चली थी ख़ुद को बनाने
उदारता का सागर विशाल
चली थी बहाने प्रेम प्यार की नदियाँ
सोचती थी बसाऊँगी स्नेह भरी दुनिया
जिसमें सब होंगे अपने
और बड़े-बड़े ऊँचे सपने
पर रिश्तों की दुनिया के लोग बड़े अजीब थे
वे ही सबसे दूर थे जो सबसे क़रीब थे
उनका एकमात्र लक्ष्य था उलझनों को बढ़ाना
रिश्तों को आपस में तलवार-सा टकराना
विभीषण या जयचंद बन-बनके आना
बग़ल में छुरी मुँह में राम की कहावत निभाना
बढ़ रहे थे रिश्तों के कँटीले झाड़
बढ़ने लगी घुटन आई भावनाओं की बाढ़
कुण्ठा, अशान्ति, वितृष्णा के बाद
जाग उठा विद्रोह
आज मैं चल पड़ी छोड़ने वो खोह
जिसमें छुपकर मैं जा रही थी
रिश्तों का ज़हर पल-पल पी रही थी
आज में चली हूँ ज़िन्दगी को मोड़ने
आज मैं चली हूँ रिश्तों के जाल तोड़ने

ooo

यादों की ऊहापोह

कुछ बैठे हैं चुप-चुप, चुप-चुप
कुछ छुपे हुए हैं गुप-चुप, गुप-चुप
मेरी स्मृति के वातायन में
कितने मुखड़े हैं झाँक रहे
कुछ आन्दोलित करते आकर
अन्तर तक झंकृत कर जाते
कुछ उद्वेलित करते तन-मन
कुछ स्मृतियाँ अंकित कर जाते
भूलूँ मैं, याद करूँ किसको
सबसे तो मेरा नाता है
न याद जिसे करना चाहूँ
वह सर्वाधिक याद आता है
यादों की ऊहापोह बड़ी
सब मुखड़े मुझको ताक रहे
सबकी आँखों में है परिचय
सब मेरी स्मृतियाँ आँक रहे
क्या याद मुझे, क्या भूल गई
सबकी आँखों में एक प्रश्न
सब अपनी-अपनी यादों का
बस एक सितारा टाँक रहे

ooo

वही होता है मसीहा

कहीं अचानक से मिल गया
अगर कोई मसीहा हमें कभी
तो हम सुनायेंगे उसको अपने
रंजो-ग़म के फ़साने सभी
पूछेंगे कहाँ छुपे थे
अभी तलक मेरे बन्धु तुम
कैसे मिले अचानक
आकर कहाँ से तुम
हमें छोड़कर कहीं अब
ऐ दोस्त तुम न जाना
जब भी पुकारें तुमको
तुम सामने ही आना
बड़ी क़िस्मतों से किसी को मिलता
कोई जो बन जाता है सहारा
जीतने की राह दिखाता उसे
जो क़िस्मतों से हारा
जिसे क़िस्मतों ने मारा
बचाता है दुनिया की ठोकरों से
दिखाता है उसको राहें सही
जब अपनी आँखें लगे चुराने
सुनायें पल-पल तीख़े ताने
लगे कि जीना बहुत है मुश्किल
न कोई राहें न कोई मंज़िल
उन अँधेरों में जो गिरते को
सँभाल लेता है
वही होता है मसीहा
○○○

धर्म की सारी परिभाषायें

धर्म की सारी परिभाषायें
इन्सान के लिये ही क्यों बनाई गईं
धर्म की सारी नियमावलियाँ
इन्सान को ही क्यों रटाई गईं
इन्सान ने बाँट लिया ख़ुद को
अपनी बनाई सीमाओं में
अलग-अलग बंद किया ख़ुद को
मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में
क्यों नहीं आज़ाद हो जाता इन्सान
उड़ते पक्षियों की तरह
जो जहाँ चाहें जाकर बैठ जाते हैं
मन्दिर, मस्जिद या गुरुद्वारे
सबसे उनके प्यार भरे नाते हैं
क्यों नहीं ऊँचे पेड़ों की शान से कुछ सीखते
जो हर धर्मस्थान में शीश झुकाकर खड़े रहते हैं
क्या नदियाँ और सागर धर्म को देखकर सरसते हैं
क्या बादल किसी ख़ास धर्म पर बरसते हैं
सूरज, चाँद, सितारों ने धर्म की कोई सीमा नहीं बनाई
खेतों की फसलें सबके लिये एक-सी लहराईं
फिर क्यों इन्सान ने अपने हाथों अपने लिये सीमायें बनाईं
अपने जीवन की नई-नई अलग-अलग परिभाषायें बनाईं
क्यों जाति, धर्म, बोली, भाषा के आधार पर
दिल तोड़ने वाली सीमायें बनाई गईं
सारी परिभाषायें इन्सान के लिये ही क्यों बनाई गईं

ooo

चंद अशआर

हमको गिला नहीं कि वो हमें मानते नहीं
ये तो नहीं कहा कि हमें जानते नहीं

हर क़दम पे ठोकरें हैं हर क़दम पे इम्तिहान
लगता है ज़िन्दगी कम पड़ जायेगी नतीजा देखने के लिये

तुमसे अचानक मिलना इक इत्तेफ़ाक़ था
पर तुम्हारा यूँ मुझे छोड़कर जाना इत्तेफ़ाक़ नहीं है

वो जो चाँद में देखते हैं सूरत किसी की
आईने में ख़ुद की सूरत पहचानते तक नहीं

रोया बहुत था आसमान उस क़ातिल की याद में
जिसने अपने ही हाथों अपने अरमानों को क़त्ल कर दिया

ज़िन्दगी भर ज़िन्दगी से माँगते रहे सुकून
जब ज़िन्दगी ने सुकून माँगा तो दहल क्यों गये

अब कोई भी अहसास नहीं दर्द है न ग़म
बस ज़िन्दगी को ज़िन्दगी से खो चुके हैं हम

ooo

ख़ुद से दूर

रात के अँधेरे में
जब भी मैं ख़ुद से मिलती हूँ
ख़ुद को पहचानने के लिये
आँखें बंद कर लेती हूँ
पर दिल के आईने में
जो तस्वीर दिखाई देती है
वो मेरी क्यों नहीं होती
मैं बदल गई हूँ
या तस्वीर बदल गई है
या ज़िन्दगी के हालातों ने
मुझे इतना बदल दिया
कि मैं ख़ुद से ही
दूर हो गई हूँ
○○○

विकस उठा एक पुष्प

विकस उठा एक पुष्प मेरे मन उपवन में
विहँस उठा नाद ब्रह्म सृष्टि के कण-कण में

सर-सर-सर पवन उमग वन कानन में नाच उठी
सरसराये पात-पात बाँसुरी-सी बाज उठी

भंगिमा ले नृत्य की डाल-डाल झूल उठी
छू-छूकर उन्हें पवन पायल सी गूँज उठी

कूद कर आकाश से छाती पर सागर की
चुलबुली चाँदनी लहरों पर मचल उठी

सँवलाया सागर मन ही मन मुस्काया
चंदा की छाया जब उसमें थिरक उठी

झिलमिलाते तारों की चुनरिया ओढ़कर
धरती पर आई राका अम्बर को छोड़कर

बीतेगी रात फिर सूरज के रथ पर
आयेगी उषा सुन्दरी अवगुण्ठन तजकर

विहँसेगा फिर से जीवन सृष्टि के कण-कण में
विकसेंगे कमल पुष्प मेरे मन उपवन में

ooo

कालिदास के मेघदूत

बदरा रे!
जल भर ला रे!
अपने कजरारे नैनों में
आकर बरसा सरसा जा रे!
कुछ बात बता जा सैनों से
दुनिया में घूम-घूम आते
मस्ती से झूम-झूम आते
किस-किस की ख़बर लेकर आते
किस-किस का संदेशा ले जाते
तुम कालिदास के मेघदूत
बिरहिन को आस बँधा जाते
तुम लिये संदेशे घूम रहे
नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे
शायद इस सावन जुड़ जायें
मेरी बिछड़ी टूटी तारें

ooo

नियति की आड़ में

क्यों तुम अपने बनाये बन्धनों के
अपनी नियति का नाम देकर
ख़ुद को उम्र भर छलती रहती हो
कभी मायके के नाम पर
कभी ससुराल की आन पर
कभी बच्चों की जान पर न्यौछावर होकर
अपने प्राण हथेली पर रखकर
स्वयं से निर्लिप्त निरासक्त
चलती रहती हो, चलती रहती हो
अपने अस्तित्व को भूलकर
अपने स्वत्व को नकारकर
ख़ुद ही प्रश्नचिह्न लगाती रहती हो
अपने अधिकार पर
क्यों इस अनदेखी आग में
रात-दिन जलती हो
मोम-सी गलती हो नियति की आड़ में
क्यों ख़ुद को छलती हो
यह त्रास नियति का नहीं
तुम्हारी अन्धी मान्यताओं का भी है
अधिकार और कर्त्तव्य दोनों तुम्हारे हैं
महत्व तुम्हारी कामनाओं और भावनाओं का भी है
केवल कर्त्तव्य की नौका पर चढ़कर
गीली लकड़ी-सी सुलगती हो
बर्फ़-सी पिघलती हो
क्यों ख़ुद को छलती हो?

ooo

सम्बन्धों की बलिवेदी पर

दग्ध विदग्ध मानस
कुछ अनुत्तरित प्रश्नों से आहत
ढूँढ रहा उत्तर कुछ प्रश्नों के
सम्बन्धों की बलिवेदी पर
कैसे बलिदान हुए
कुछ रिश्ते अपनों के
कैसे आदर्शों पर हुए प्रहार
कैसे खाये व्यंग के तीर
तनी तानों की तलवार
क्या लड़की होना इतना बड़ा पाप है?
ये मर-मर कर जीना कितना बड़ा श्राप है?
क्यों एक ही जीवन में
बदलती है बार-बार चोले?
कभी पिता के घर
कभी पति के घर
कभी बच्चों के घर
बिना कुछ कहे बिना कुछ बोले
हर चोले में होते हैं ढेरों परिवर्तन
अबूझे प्रश्नों के नर्तन
ख़ून होते हैं सपनों के
पर कुछ भी पूछने का
करती नहीं साहस
सदैव घुटती रहती है
अनुत्तरित प्रश्नों से आहत
लेकर दग्ध विदग्ध मानस

○○○

नया मोड़ प्यारा सा

बुझा दिये जो दीपक तुमने अपने हाथों से
काश जला जाते उनको तुम अपने हाथों से

आना गर स्वीकार नहीं तो हमको पास बुला लो
न आने का कारण भी तो हमको ज़रा बता दो

कुछ अपनी आकर कह जाते कुछ मेरी भी सुनते
साथ बैठकर जीवन के कुछ ताने-बाने बुनते

छुप-छुप कर क्यों हमें सताते आओ सामने आओ
क्या गुनाह हमने कर डाला यह तो हमें बताओ

जीवन इतना छोटा न था सुलझ न पाती उलझन
फिर क्यों बाँध नहीं पाये हम इक छोटा-सा बन्धन

फिसल गया जो वक़्त हमारे हाथों से
निकल गया जो वक़्त हमारे हाथों से

उसे भूलकर जो भी शेष बचा है उसको
देकर नया मोड़ प्यारा-सा नई राह अपनायें

दीये भोर के अब दोनों जाने कब बुझ जायें
गिले और शिकवे जो भी हैं यहीं सुलझ सब जायें

ooo

जाकर आता हूँ

घर से बाहर जाते समय
वह माँ से कहता था
माँ मैं जाकर आता हूँ
एक दिन वह
यह कह कर गया
पर घर में वापिस आई
एक आतंकवादी की गोलियों से
क्षत-विक्षत एक लाश
क्या वह आतंकवादी भी
अपनी माँ से यही कहता है
"माँ, मैं जाकर आता हूँ"
क्या किसी दिन वह भी
इसी रूप में जायेगा
अपनी माँ के पास?
○○○

मनाने के लिये...

आज आई मन में एक नई बात
ज़िन्दगी को सुनाऊँ ज़िन्दगी के हालात
पूछूँ क्यों रूठी रहती हो मुझसे
आओ आज मैं तुमको
मनाने के लिये आई हूँ
तुमने हर पल-पल मुझको जो बख़्शे
कुछ वही दर्द सुनाने के लिये आई हूँ
मेरे अकेलेपन के साथी
मेरे बेरंग सपने
कभी मैंने भी तो कुछ
रंगीन ख़्वाब थे बुने
कैसे ज़िन्दगी से पाऊँ
थोड़ी-सी ज़िन्दगी
एक अर्ज़ सुनाने के लिये आई हूँ
छीन लिये संगी साथी क्यों
मित्र, बन्धु सब नये पुराने
कैसी वीरानी-सी छाई
गए कहाँ सब स्वप्न सुहाने
अश्रु भर दिये क्यों आँखों में
आओ बचा लो, मुझे छुपा लो
अब अपनी आँखों में
आज मैं तुम्हें
अपना मर्ज़ दिखाने के लिये आई हूँ
ज़िन्दगी मैं तुमको
मनाने के लिये आई हूँ

ooo

समय-समय के चक्र

समय-समय के साथ बदलती जीवन की परिभाषा

समय-समय के साथ बदलते हैं जीवन के अर्थ
कल जो सबके लिये सही था आज हो गया व्यर्थ

समय-समय के साथ बदलते लक्ष्य बदलती राहें
जो कल तक थे शत्रु मिल रहे अब फैलाकर बाहें

समय-समय के साथ बदलते अनुभूति अहसास
अच्छे-बुरे वक़्त के होते अलग-अलग जज़्बात

भले वक़्त में बन जाते हैं दूर-दूर के अपने
बुरे वक़्त में हो जाते हैं सपनों जैसे अपने

समय खिलाता खेल आदमी खेल रहा है
समय-समय के चक्र आदमी झेल रहा है

○○○

ख़ुशबू रहे जहाँ भी

जीवन के दो रंग यही हैं मिलना और बिछड़ना
लेकिन ख़ुशबू रहे जहाँ भी उसका काम महकना

काम किसी के जो आ जाये सफल उसी का जीना
अमृत सदा सभी को बाँटें और ज़हर ख़ुद पीना

जीवन तो इक रंगमंच है और पात्र हम इसके
जो दो मीठे बोल बोल दे बन जायें हम उसके

रहें हृदय के पास सभी हम बाँटें सुख-दुख अपने
आँखों में आकर मुस्कायें जो भी देखें सपने

रहें जहाँ भी हम हिलमिल कर महके वह फुलवारी
और भविष्य सभी का होवे मंगलमय सुखकारी

मिलना और बिछड़ना तो है उस ईश्वर की माया
जिसने हम सबको अदृश्य से अपना नाच नचाया

डोर उसी के हाथ हमारी खींचे या फिर छोड़े
वही हँसाये वही रुलाये वही जोड़कर तोड़े

जितने दिन का संग साथ है छोड़ें नहीं चहकना
जीवन के दो रंग यही हैं मिलना और बिछड़ना
लेकिन ख़ुशबू रहे जहाँ भी उसका काम महकना

ooo

एक दर्द

दुनिया ने दिये सौ ज़ख़्म मगर
इक ज़ख़्म तुम्हारा खा न सके
दुनिया के दिलों पर राज किया
पर अपना तुम्हें बना न सके

कैसी मजबूरी है ये ख़ुदा
वो सामने हैं पर अपने नहीं
ये दूरियाँ कैसी कर दीं अता
आते वो मेरे सपने में नहीं

हम उनकी कुछ भी सुन न सके
और अपनी उन्हें सुना न सके
कितने अरमान संजोये थे
कितने सपने बुन डाले थे

मैं इन्द्रधनुष पर झूली थी
जीवन में सिर्फ़ उजाले थे
फिर कैसे अचानक रात हुई
अँधियारे की क्या घात हुई

हम अँधियारे वो मिटा न सके
फिर कभी सवेरे आ न सके
अब न हैं गिले और न शिकवे
हमने बस ख़ुद को ख़त्म किया

चुपचाप सियेंगे हम उसको
तुमने जो हमें है ज़ख़्म दिया
इक दर्द हमें बस है इतना
हम अपना दर्द छिपा न सके

ooo

चाहतें

ज़िन्दगी में चाहतों का भी
अजीब सिलसिला है
कभी कुछ मिला
कभी कुछ नहीं मिला है
जो हासिल होता है
उसकी चाहत नहीं होती
जो मिल जाता है
उससे राहत नहीं होती
जो मिलता है उससे इन्कार करते हैं
जो नहीं मिलता उसका इन्तज़ार करते हैं
जो चाहत पूरी हुई
उसका इक़रार नहीं किया
जो अधूरी रही
उसने बेक़रार किया
चाहतों की चाहत में
इन्सान ख़ुद को खो देता है
चाहतों के सागर में
ख़ुद को डुबो देता है
कोई चाहत ख़ुशी बनकर आती है
कोई ग़म बन जाती है
चाहतों के जंगल में
ज़िन्दगी यूँ ही कट जाती है
कितनी चाहतें रास्ते में दम तोड़ देती हैं
कितनी ज़िन्दगी का रुख़ मोड़ देती हैं
चाहतों का कारवाँ ज़िन्दगी भर चलता रहता है
कभी हाँ कभी न का चक्र
निरन्तर चलता रहता है ○○○

टूट गई ज़िन्दगी

चाहतों की चाह में बीत गई ज़िन्दगी
जाने किस आस में बीत गई ज़िन्दगी
कुछ सपने कुछ अरमान
फिर भी अधूरे हैं
क्या सारे सपने
कभी हुए पूरे हैं
जाने कहाँ से आती रहती हैं
ज़िन्दगी में चाहतें
क्यों नहीं मिल पाती हैं
चाहतों से राहतें
क्यों हर नये दिन
कुछ नया चाहता है दिल
क्यों विस्तृत आकाश में
उड़ना चाहता है दिल
गिरे जब आकाश से टूट गई ज़िन्दगी
चाहतों की चाह में बीत गई ज़िन्दगी

○○○

क्या चाहा

जीवन के हर मोड़ पर
मैंने जीवन से क्या चाहा
सिर्फ़ कुछ सीधे सच्चे रास्ते
फिर भी मुझे देने पड़े
हर मोड़ पर बहुत से इम्तिहान
एक-एक क़दम के वास्ते
बीतते रहे बरस पर बरस
बरसते रहे यादों में बसे
अतीत के बादल
जो भूली भटकी मुस्कुराहट
कभी-कभी देते थे
रोज़ करते थे अन्तस् को घायल
फिर भी लगाकर रखा
जीवन को गले से
क्योंकि जो मिल जाते हैं
सुख के क्षण भले से
शायद वही मेरी नियति हैं
वही हैं मेरे जीवनरूपी मरुस्थल के
सरस पुष्पित मरुद्यान
मेरे सपने मेरे अरमान
मेरे ज़मीन और आसमान

ooo

सत्य की पोशाक

कभी-कभी
सत्य की पोशाक पहनकर
असल की गाड़ी चलने लगती है
बड़ा बड़प्पन बड़ी गरिमा दिखाते हुए
गजगामिनी सी ज़िन्दगी मचलने लगती है
पर जिस दिन यह नकली परिवेश
होता है निःशेष
उस दिन जो नग्न सत्य सामने आता है
वह असत्य से कहीं अधिक कटु
कहीं भयंकर होता है
कोई भी पोशाक फिर उसे ढँक नहीं सकती
एक झूठ के लिए हज़ार झूठ बोलने पड़ते हैं
पल-पल नये झूठ के ताने-बाने गढ़ते हैं
परन्तु एक सत्य को
रोज़ किसी नई पोशाक की
सत्यसिद्धि के लिए नई आवाज़ की
ज़रूरत नहीं पड़ती
सत्य की आकृति
नित नए रूप नहीं गढ़ती
उसकी एक ही पोशाक ही
नित नई पोशाकों से भव्य है
क्योंकि सत्य केवल सत्य है
○○○

छोटे थे मेरे हाथ ही

मन में अनगिनत इच्छायें
कैसे होंगी पूरी
कुछ हो जायेंगी पूरी
कुछ रह जायेंगी अधूरी
जो पूरी होंगी
वो शायद भुला दी जायेंगी
कुछ देर या कुछ दिन के लिए
फिर अधूरी इच्छायें
आ-आकर सतायेंगी
वो अपूर्ण कामनायें
मरते दम तक न भूल पायेंगी
तब याद आयेंगी शायर की पंक्तियाँ
बहुत निकले मेरे अरमान
लेकिन फिर भी कम निकले
मेरी अधूरी इच्छाओं के जनाज़े
निकलेंगे मेरे साथ ही
ज़िन्दगी ने दिया तो बहुत कुछ
पर शायद
छोटे थे मेरे हाथ ही

ooo

शायद कभी

कभी खो दिया कभी पा लिया
कभी रो लिया कभी गा लिया
चलता रहा यूँ कारवाँ
इस ज़िन्दगी की राह का
कुछ सपने कुछ अरमान थे
मुश्किल थे कुछ आसान थे
होता रहा पूरा सफ़र
इस ज़िन्दगी की चाह का
सोचा किए दिन रात हम
दुख थे अधिक क्यों सुख थे कम
अनजाने में शायद कभी
किया हमने कोई गुनाह था
संसार सागर में सदा यह ज़िन्दगी रही तैरती
मैं डूबता-उतराता रहा, अभी मुक्ति में तो देर थी
सारे समन्दर मिल गये, मेरी ज़िन्दगी को बहाते रहे
कैसा अजब जीवन था यह
और कैसा प्रबल प्रवाह था
बस याद इतना है मुझे
कभी मर लिया, कभी जी लिया
यूँ ज़िन्दगी के सागरों का
सारा जल मैंन पी लिया

ooo

मुझे किसने पुकारा

गूँज उठा कानों में किसका सुर प्यारा
किसने पुकारा मुझे किसने पुकारा
सीने में हूक उठी
कोकिल ज्यों कूक उठी
लगने लगा सबकुछ कैसा उजियारा
किसने पुकारा मुझे किसने पुकारा
सूरज सा उदित हुआ
चंदा भी मुदित हुआ
अन्तर में दमक उठा एक-एक तारा
किसने पुकारा मुझे किसने पुकारा
फिर से कहीं छुप न जाये
साँस मेरी रुक न जाये
यह पुकार ही तो मेरे जीने का सहारा
किसने पुकारा मुझे किसने पुकारा

○○○

ये दिल चोर है

मैं बड़ी ईमानदारी से
वक़्त की क़ीमत जानती हूँ
वक़्त का हर लम्हा
किसी भी दौलत से बढ़कर है
मानती हूँ
फिर भी न जाने क्यों
कभी-कभी दिल बेईमान हो जाता है
चाहता है तुम्हारे वक़्त के
कुछ लम्हे चुरा लूँ
किसी भी बहाने से
तुम्हें बुला लूँ
तुम ही कहो
दिल पर किसका ज़ोर है
अब ये दिल चोर है
तो चोर है
क्या करे
छुपाने पर भी राज़ खुल जाते हैं
एक छोटी-सी चोरी पर
हर तरफ़ शोर है
ज़र्रा-ज़र्रा चिल्ला रहा है
ये दिल चोर है
ये दिल चोर है
○○○

कैसे झूठे पे

कैसे झूठे पे ऐतबार करें
काम ऐसे में बार-बार करें
कितने वादे किये गये झूठे
हँस के टालें उन्हें या हम रूठें
क्यों न हम ख़ुद को होशियार करें
कैसे झूठे पे ऐतबार करें
पास होकर भी दूर रहते हैं
हम शिकायत करें तो कहते हैं
दोस्त हम दोस्त पर न वार करें
कैसे झूठे पे ऐतबार करें
अपने दिल से फ़रेब खाते हैं
रूठने से गुरेज़ खाते हैं
कैसे रूठें कि जिसको प्यार करें
कैसे झूठे पे ऐतबार करें
प्यार के इम्तिहाँ बहुत होते
प्यार में हँसते प्यार में रोते
भोला मन ख़ुद ही ख़ुद को ख़ार करें
कैसे झूठे पे ऐतबार करें

○○○

जो सही राह है

भूल न जायें राह दुनिया में
इसलिये राह आओ हम ढूँढें
किसी ग़फ़लत में रह न जायें कहीं
जो सही चाह है उसे ढूँढें

मिलेंगे राह में बहुत से बहकाने वाले
बदनाम करेंगे कितने ही सताने वाले
कम ही होंगे सही बात बताने वाले
दिल जो बोले सही उसी को हम ढूँढें

देने वाले ने ग़लत और सही दोनों दिये
ये हमारी ख़ुशी है हमने क्या चुन के लिये
बाद में ये न कहें ज़ख़्म हमने ख़ुद ही किये
सही मरहम जो है उसे ढूँढें

सही मंज़िल सही राह को चुनना होगा
अपना ताना-बाना तो हमें ख़ुद ही बुनना होगा
ठीक है क्या, ग़लत है क्या, ये गुनना होगा
अपने में ही सही और ग़लत को ढूँढें
जो सही राह है उसे ढूँढें

ooo

बरसो बरस-बरस बरसो

बरसो जी कारे बादरा, बरसो बरस-बरस बरसो
सरसो जी कारे बादरा, सरसो सरस-सरस सरसो
कारी चदरिया से ढक लेते कैसे तुम सारी दुनिया
टप-टप टपकें आसमान से कैसे नन्हीं बूँदनियाँ
उमड़ घुमड़कर गरज-गरजकर
खेल अनोखे दिखलाते
बिजली ढोल ढमाके ढम-ढम
साथ-साथ लेकर आते
देख तुम्हारे खेल तमाशे
हम सबका मन हरषो
बरसो जी कारे बादरा
बरसो बरस-बरस बरसो
कभी-कभी तुम बड़े अनोखे
नखरे हमको दिखलाते
आवाज़ें दे तुम्हें प्यार से
पर तुम नज़र नहीं आते
कोले मेघा पानी दे-दे
हाथ जोड़कर हम गाते
प्यासी धरती की छाती पर
कितने घाव लगा जाते
खड़ी फसल भी सूख रही
तुम आओ सबके भाग जगें
हरियाला उजियारा दे दो
शुष्क अँधेरा दूर भगे
न कहो हमसे रूठ-रूठ कर, तुम तरसो, तुम सब तरसो
बरसो जी कारे बादरा, बरसो बरस-बरस बरसो

○○○

सुहावना सावन

तड़-तड़-तड़-तड़-तड़ तड़ित करे
गड़-गड़-गड़ बादल गरज रहे
घन-घन-घन घोर घटायें घिरीं
छम-छम-छम बादल बरस रहे
टर-टर-टर दादुर टर्राये
मेघा धरती से नियराये
तोड़े नदियों ने भी बन्धन
जल-थल जल-थल कर लहराये
धरती ने सोखा ढेरों जल
घन बरस-बरस कर मुस्काये
जल भर अन्तर में सरितायें
प्रिय सागर से मिलने जायें
नव-नव पल्लव वन उपवन में
खिल-खिल-खिल करते भर आयें
अम्बर से धरती पर आकर
धरती का कण-कण सरसायें
क्या घोर मचा गर्जन तर्जन
सारी दिशायें हिल-हिल जायें
कैसा सुहावना सावन है
धरती अम्बर मिल-मिल जायें
दुंदुभी नगाड़े बाज रहे हैं
रंगमंच पर अम्बर में
धरती का जन-जन नृत्य करे
वन, उपवन, खेतों, आँगन में

○○○

वसुधा कुटुम्ब सबका नारा

हम रुकें नहीं
हम झुकें नहीं
हम बढ़ें चलें
हम चढ़ें चलें
हम डरें नहीं तूफ़ानों से
हम रुकें नहीं चट्टानों से
ऊँचे पर्वत भी झुक जायें
गहरे सागर भी रुक जायें
बाधा न रहे कोई भग में
शत्रु न बचे कोई जग में
जब शत्रु मित्र बन जायेंगे
तब कोई कष्ट न आयेंगे
वसुधा कुटुम्ब सबका नारा
बन जाये जग इक घर प्यारा
सुख दुःख सक आपसे में बाँटें
आपस में कोई लड़े नहीं
तब पड़ें प्रेम के न घाटे
नफ़रत का काँटा गड़े नहीं
हम सब इक मंज़िल के राही
हम रुके नहीं
हम झुके नहीं

○○○

कौन-सा नाम दें

जीते रहे पल-पल जिस ज़िन्दगी को
मरते रहे पल-पल जिस ज़िन्दगी को
पूछते रहे सवाल उसी ज़िन्दगी से को
कौन-सा नाम दें उस ज़िन्दगी को?
मन्नतें भी माँगी दुआयें भी करीं
इबादत के साथ सदायें भी करीं
सिलसिला कोई भी न मिल पाया जिसे
कौन-सा नाम दें उस ज़िन्दगी को?
ज़िन्दगी में बहुत कुछ खोया
ज़िन्दगी में बहुत कुछ पाया
फिर भी एक अजीब-सा खालीपन क्यों रहा
कौन-सा नाम दें उस ज़िन्दगी को?
यूँ ही कशमकश में कटती रही ज़िन्दगी
अधूरा-सा अफ़साना बनकर रह गई ज़िन्दगी
बिना किसी मक़सद की बिना किसी मंज़िल की
कौन-सा नाम दें उस ज़िन्दगी को?

○○○

सुलग रही हो तिल-तिल

बन्धु मेरे!
अपनी अनामिका की रस्सी को
इतनी ज़ोर से भी न खींचो
कि उसके हाथ में खरोंच आ जाये
अपने गले की फाँसी इतनी भी न कसो
कि अनामिका के दिल में मोच आ जाये
शायद वह भी ग्रस्त हो
कुछ कुण्ठाओं में विवशताओं में
सुलग रही हो तिल-तिल
अपनी ही मजबूरियों में
शायद वह भी ढूँढ रही हो
आशा की किरण दुराशाओं में
जी रही हो सपनों में
एक आस अधूरी में
टूट जाने दो गले की रस्सी को
आशा की किरण को न छोड़ना
जिसकी यादें सिहराती हैं मन को
उस किसी अपने के मन को न तोड़ना

ooo

कन्हैया-कन्हैया

कन्हैया - कन्हैया - कन्हैया - कन्हैया
यशोदा का कान्हा नन्द जी का कन्हैया
माँ यशोदा की मटकी का माखन चुरैया
राधारानी गोपी ग्वालों का प्यारा कन्हैया

वासुदेव देवकी का वो नन्हा-सा लल्ला
गोकुल जा के पहुँचा बलदाऊ का भैया
वो जंगल में मंगल रचाता था कान्हा
बनके ग्वालों का साथी चराता था गैयाँ
गया मथुरा तो फिर न आया पलट के
पुकारें हैं ग्वाले रँभाती हैं गैयाँ

वो यमुना की लहरें बुलाती हैं तुझको
दरश फिर दिखा कालिया के नथैया
गोपियाँ रो रहीं राधा तेरी दीवानी
कहें आजा-आजा ओ मुरली बजैया
याद करतीं तुझे कान्हा गोकुल की गलियाँ
छुपा जा कहाँ रास का वो रचैया

जहाँ छलिया नाचा था संग गोपियों के
उदास हैं वन-उपवन कदम्ब की वो छैया
गये गुरु आश्रम ग्रहण करने विद्या
बने मित्र निर्धन सुदामा के भैया
हुआ युद्ध जब कौरवों पाण्डवों का
बने सारथी भक्त अर्जुन के भैया

कुरुक्षेत्र में आमने-सामने दोनों सेनायें
सगे मित्र बन्धु भी विधि ने दिखाये
जमाव दोनों सेनाओं का ख़ूब बड़ा था

पर उलझन में अर्जुन खोया-खोया खड़ा था
खड़े सामने जो सभी तो हैं अपने
उन्हें कैसे मारूँ जो हैं मेरे अपने
दिया ज्ञान गीता का, था ऐसा कन्हैया
वही है खिवैया, वही है खिवैया
जो दिया ज्ञान गीता का अर्जुन को उसने
करेगा का वही पार मेरी भी नैया
यशोदा का कान्हा नन्द जी का कन्हैया
कन्हैया - कन्हैया - कन्हैया - कन्हैया
भँवर में फँसी है ये भारत की नैया
देशद्रोहियों को मारो कन्हैया
ये घर में कुरुक्षेत्र क्यों बन रहा है
दो गीता का ज्ञान इनको गीता रचैया
बहुत याद आती है कान्हा तुम्हारी
तुम्हीं हो भारत की नैया की खिवैया

○○○

थोड़ा प्यार बाँटते रहना

अपने मन में भरे प्यार से
थोड़ा प्यार बाँटते रहना
रंग रंगीली दुनिया में से
अच्छे रंग छाँटते रहना

रोज़ हमें मिलते रहते हैं
कितने परिचित और अपरिचित
जो मन को अपने भा जाता
घर में वह ही रहता चर्चित
वह जन ही होता है अपना
जिसे देख मन होता हर्षित

फिर भी अपने और पराये
शत्रु मित्र में भेद न करना
दीन हीन यूँ समझ किसी को
किसी चित्र में छेद न करना
चुभने वाली बातें करके
कभी किसी को दुखी न करना

गिरते को तुम संबल देना
किसी को नीचे नहीं गिराना
स्नेह प्यार से सब आँखों के
आँसू सदा सुखाते रहना
अपने प्रेम की मीठी धार से
सबके दर्द काटते रहना
अपने मन में भरे प्यार से
थोड़ा प्यार बाँटते रहना

ooo

ज़िन्दगी का ख़ज़ाना

ज़िन्दगी तेरे ख़ज़ाने ने मुझे क्या न दिया
एक-एक पल मेरे दिल ने तुझे याद किया
कभी ख़ुशियों की बरसात से नहलाया मुझे
कभी फूलों की तरह प्यार से सहलाया मुझे
कभी दे-दे के थपकियाँ सुलाया मुझे
कभी सुनहले सपनों में भी भुलाया मुझे
कभी बिछड़े से भी मिलाया मुझे
कभी विरहाग्नि में जलाया मुझे
जो दिया तूने ख़ुशी से वह लिया
ज़िन्दगी तेरे ख़ज़ाने ने मुझे क्या न दिया
कभी हँसाया मुझे और कभी रुलाया मुझे
तूने किस-किस तरह सताया मुझे
मैं कभी कर न सकूँ तेरे वो अंदाज़ बयाँ
तेरा अमृत तो हमेशा ही पिया
ज़िन्दगी तेरे ख़ज़ाने ने मुझे क्या न दिया
ज़िन्दगी तुझको मैं समझ न सकी
तेरे रंगों को मैं परख न सकी
कभी चलती रही और कभी रुक भी गई
तेरी चालों से ज़िन्दगी मैं थक भी गई
तेरे सारे सितम मैं सहती गई
जिधर तूने कहा मैं बहती रही
पर तेरी उलझनें नहीं सुलझीं
जितना निकली मैं उतना ही उलझी
पर धरोहर है हर एक पल जो तेरे साथ जिया
ज़िन्दगी तेरे ख़ज़ाने ने मुझे क्या न दिया

○○○

अनुगूँज गूँजती हरदम

जब सूनी-सूनी शामों ने, तेरी यादों को याद किया
तब आकर तेरी यादों ने, उन शामों को आबाद किया
कुछ थीं उदासियाँ जो आकर, शामों को करती थीं उदास
कुछ थीं ऐसी मीठी यादें, जो आकर भरती थीं उजास
कुछ आवाज़ें जो लगाईं थीं, जाकर उन सूने वीरानों में
उनकी ही अनुगूँज गूँजती है, हरदम मेरे इन कानों में
मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे में, गिरजे में जाकर दीं सदायें
कोई भी रब ऐसा न था, जिसके दर पर माँगीं न दुआयें
यूँ लम्हा-लम्हा कटी ज़िन्दगी, उलझन थी कुछ यादों की
इस जीवन को सारी पूँजी, बस यादें थीं कुछ वादों की
कुछ यादों की बारात सजाई, उन वादों के सहारे पर
लगता था जीवन की नैया, लग जायेगी किसी किनारे पर
पल-पल जीकर पल-पल मरकर, ख़ुद को भ्रम से आज़ाद किया
पर भ्रम से आज़ादी भी भ्रम था, भ्रम ने मुझको बर्बाद किया
यादों का कारवाँ भेज दिया पर, पर आये न उनके साथ कभी
मैंने क्या कोई गुनाह किया, जो बाँधी डोरी तुमसे कभी
नित सूनी-सूनी शामों में, तेरी यादों को याद किया
फिर-फिर आ तेरी यादों ने, उन शामों को आबाद किया

○○○

जंगल की ख़ामोशियाँ

जंगल की इन वीरानियों में जो छुपीं ख़ामोशियाँ
आज उनमें हो रही हैं अजब-सी सरगोशियाँ
हैं बहुत हैरान सब क्या है कोई मेहमान आया
या फिर इन वीरानियों में है कोई नादान आया
कोई दीवाना भला क्या खोजने आया यहाँ पर
या ख़ज़ाना ज़िन्दगी का खोने को आया यहाँ पर
पत्ता-पत्ता ज़र्रा-ज़र्रा इन सवालों में फँसा है
आने वाला वो दीवाना इन सवालों पर हँसा है
जिस सुकूँ को ढूँढने आया था वो वीरानियों में
वो सुकूँ उसका मिला जंगल की इन नादानियों में
कितने सीधे कितने भोले हैं यहाँ के रहने वाले
छल कपट से दूर हैं कुदरत के रंग में बहने वाले
जो सुकूँ उसको मिला न शहर की रंगीनियों में
वो सुकूँ उसको मिला जंगल में घाटी वादियों में
ख़ुश हैं सब जाकर ख़ुशी से एक दूजे को बताते
ये नहीं लगता है वैसा जो हमें आकर सताते
आज जंगल में हमारे है नया मेहमान आया
जो बनाने आ रहा है एक अपना आशियाँ
इसलिये टूटी हैं इस जंगल की ये ख़ामोशियाँ
कैसे स्वागत करें इसका हो रहीं सरगोशियाँ

ooo

जीवन और प्रकृति का मेल

ईश्वर का दिया यह जीवन
प्रकृति का विस्तृत साम्राज्य
कण-कण में व्याप्त कुदरत का ख़ज़ाना
पल-पल बदलते वक़्त के नज़ारे
सुबह सवेरे अँधकार के पर्दे से प्रकट होती
अवगुण्ठनवती उषा सुन्दरी का आगमन
सात घोड़ों के रथ पर सवार सूर्यदेव का
किरणें बिखेरते, जगमग करते आना
धीरे-धीरे ऊँचे और ऊँचे होते जाना
फिर धीरे-धीरे नीचे उतरना शुरू करना
और तरह-तरह के रंग बिखेरते हुए
न जाने कैसे, गहरे सागर में कूद पड़ना
सूर्यास्त होते ही शाम का ढलना
आकाश में चाँद-सितारों का जगमगाना
हर पल हर दृश्य अपूर्व, आकर्षक
भव्य, रमणीय, रोमाँचकारी, दिल को छूने वाला
जीवन भर प्रतिदिन यह दृश्य देखकर भी
किसी का दिल भरता भी नहीं ऊबता भी नहीं
हर रोज़ लोग नये सपनों से भरी
सुख चैन देने वाली, नींद देने वाली रात का
और हर आने वाले दिन की नई उमंग भरी
सपनों को पूरा करने वाली सुबह का
इन्तज़ार बड़ी बेक़रारी से करते हैं
कैसा अनोखा है यह
जीवन और प्रकृति का मेल

○○○

अस्तित्व को खोने का विष

आज के युग में भी नारी होना कितना बड़ा गुनाह है
उसकी जीवन सिर्फ़ एक दर्द भी आह है
नारी जीवन का यह कटु सत्य हर नारी बिना समझाये ही
किसी न किसी रूप में महसूस कर लेती है
वह भी न जाने कब से बैठी यह सत्यान्वेषण कर रही थी
उसके निस्तेज अधरों पर मुस्कान की एक क्षीण सी रेखा खिंच गई
परिवार और समाज के हर तरह के व्यवहार
उनके दिये सारे दुख दर्द सारे अत्याचार
सबको सहते हुए भी अपना मनोबल बनाये रखना ही
नारी का परम धर्म और जीने का सहारा है
सारी दुनिया परिवर्तन के दौर से गुज़र रही है
हवायें रुख़ बदल रही हैं
मुझे भी स्वयं को समझना है अपने आप को पहचानना है
इस प्रकार अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर
एक प्रश्नचिह्न लगाकर, मैं नहीं जा सकती
अपने अस्तित्व को खोने का विष, मैं नहीं पी सकती
उसने अपनी नई सोच को हृदय में भरकर
एक नई ऊर्जा की अनुभूति के साथ एक प्रण कर लिया
जब यह ज़िन्दगी मेरी अपनी है
तो मार्ग और लक्ष्य भी मेरे अपने हैं
दूसरों के हस्तक्षेप को अपने जीवन में महत्व क्यों दूँ
मुझे अपने लिये भी कुछ करना है
यूँ ही घुट-घुटकर नहीं मरना है
वह नई ताक़त के साथ उठी और नई ऊर्जा के साथ
रोज़ के काम में लग गई

ooo

स्मृतियों में क़ैद कहानियाँ

स्मृतियों में क़ैद कहानियाँ
दिनभर दिल के हर कोने को
कुरेद-कुरेदकर उनमें छुपती रहती हैं
एक-एक स्मृतिकण को, दाने की तरह चुगती रहती हैं
जब जब मस्तिष्क में घर बनाती रहती हैं
हरदम किसी न किसी भूली-बिसरी कहानी की याद दिलाती रहती हैं
रात होते ही ये कहानियाँ आँखों में आ जाती हैं
दिल और दिमाग़ से निकलकर सपने सजाने आ जाती हैं
एक-एक कहानी नित नूतन क्लेवर लेकर आती हैं
कभी हँसाती है कभी रुलाती है
सपनों से जाग कर मैं उन्हें बुलाती हूँ
आओ न मेरे पास कहाँ छुप गईं
मुझे बेचैन कर क्यों चुप हो गईं
तब ये अतीत के चलचित्र आ जाते हैं सामने
दिनभर मुझे सताने
साथ लेकर फीकी धूमिल धूल की परतों में लिपटी
या रंगीन रेशमी सलवटों में लिपटी निशानियाँ
मैं कभी इनको भूलना चाहती हूँ
कभी इनमें झूलना चाहती हूँ
यूँ खेलती रहती हैं मुझसे
मेरी साँसों में बसने वाले
खट्टे-मीठे अहसासों वाली
ये स्मृति में क़ैद कहानियाँ

○○○

सिर्फ़ अपने लिये ही नहीं

हमें सिर्फ़ अपने लिये ही नहीं
अपनों के लिये भी जीना है
हमें सिर्फ़ अपने सपनों के लिये ही नहीं
अपनों के सपनों के लिये भी जीना है
इस दुनिया में बहुत कुछ होता है
कोई हँसता है कोई रोता है
सुख-दुःख के ताने-बाने हैं
जीने-मरने के बहाने हैं
कहीं रौशनी कहीं अँधेरा है
हर रात के बाद सवेरा है
कौन अपना कौन पराया है
यह तो बस मन की माया है
मन जिससे मिल जाये अपना
न इससे बड़ा कोई सपना
रिश्ता है न कोई उससे बढ़कर
मन ख़ुश होता उसकी सूरत गढ़कर
हमें सिर्फ़ अपने ही नहीं
अपनों के ज़ख़्मों को भी सीना है
अपने अपनों के लिये भी जीना है
अमृत सबको बाँट कर विष ख़ुद पीना है
अपने लिये तो सब जीते हैं
दूसरों के लिये जीने वाला नगीना है

○○○

यादें-यादें-यादें-यादें

बिसर गईं वो सारी बातें
भूल गये वो क़समें वादे
अब तो बचीं सिर्फ़ जीवन में
यादें - यादें - यादें - यादें
बचपन की वो सखी सहेली
जिनसे तब बदली थी चुन्नी
बढ़ी प्रेम की गंगा दिल में
रोई हँसी थी छोटी-मुन्नी
धीरे-धीरे बड़े हो चले
सीख लिये थे शिकवे गिले
कभी हँसी में उड़ा दिया था
और प्यार से गले मिले
थोड़े बड़े हुये जब हम, भूल गये सब ख़ुशियाँ ग़म
जीवन एक मशीन बन गया, जाने कब हाथों से फिसल गया
कर्त्तव्यों को पूरा करते, कभी थे जीते कभी थे मरते
तभी किसी ने दे दी दस्तक, श्वेत हो चला तेरा मस्तक
आई निकट जीवन की संध्या, झुकने लगा है तेरा कंधा
हाथों में वो दम न रह गया
पैरों में वो ख़म न रह गया
छूट चले आधार सभी
छोड़ चले हैं यार सभी
भूला हुआ अतीत आ गया
हमको गले लगाने
याद आ गए एक बार फिर
बीते वक़्त सुहाने
याद आ गईं सारी बातें याद आ गये वादे
पर अब तो हैं बचीं जीवन में - यादें, यादें, यादें, यादें

○○○

शिकायत थोड़ी

तुमसे रूठे तो नहीं फिर भी है शिकायत थोड़ी
ध्यान से सुन लो ज़रा कर दो इनायत थोड़ी

ये लगा किसी दिल ने समझ ली किसी दिल की बात
मिलते ऐसे लोग कहाँ जो समझ लें किसी दिल की बात
बातों ही बातों में इक डोर थी तुमसे जोड़ी
तुमसे रूठे तो नहीं फिर भी है शिकायत थोड़ी

ज़िन्दगी यूँ तो चली जाती है रस्ते-रस्ते
ज़िन्दगी फिर भी गुज़र जाती है बसते-बसते
क्या हुआ तुमने राह क्यों मोड़ी
तुमसे रूठे तो नहीं फिर भी है शिकायत थोड़ी

साथ चलते हुए आ जाती कभी है दूरी
राह में काँटों से आ जाती है कोई मजबूरी
दोस्त तुमसे इक डोर थी हमने जोड़ी
तुमसे रूठे तो नहीं फिर भी है शिकायत थोड़ी

कोई आ जाता है मंज़िल से गिराने वाला
कोई मिल जाता है गिरतों को उठाने वाला
कभी कोई दोस्त बना, कभी दोस्ती तोड़ी
तुमसे रूठे तो नहीं फिर भी है शिकायत थोड़ी

ooo

क्या दिन थे सुहाने

कहीं ख़ुशी के तराने
कहीं हैं ग़म के तराने
कहीं अँधेरों के साये
कहीं उजाले सुहाने
कोई ढूँढता था मंज़िल को दर-बदर चलकर
किसी के सामने मंज़िल खड़ी थी ख़ुद चलकर
अजीब दास्ताँ दुनिया की क्या सुनायें तुमको
हर दिल में छुपी कहानियाँ क्या बतायें तुमको
न जाने कब किसको लग जायें किसके निशाने
लम्हेभर में बदलती ज़िन्दगी कहें हम क्या
किसके-किसके ग़म में क्या है सुनें हम क्या
कहना-सुनना इक दूजे का है चलता उम्रभर
ख़ुशियाँ और शिकवे शिकायतें भी चलते ज़िन्दगीभर
संक्षेप में ये सब तो हैं जीते रहने के बहाने
यादें रह जाती हैं वक़्त कट जाता है
कभी अँधेरा घिरता है कभी छँट जाता है
यादों के दामन में छुपे रहते अच्छे बुरे दिन
जिन्हें याद करते कभी हँसकर कभी तारे गिन-गिन
तब व्यंग से मुस्कुरा कर कहते हैं क्या दिन थे सुहाने

○○○

खो गई मेरी कविता

कभी-कभी मेरी कविता की पंक्तियाँ
दिल से, दिमाग़ में
ऐसे घूमने लगती हैं
जैसे बाहर निकलने का
रास्ता ढूँढ रही हों
जैसे बाधा दौड़ में फँसकर
बाधायें पार करके
अँगुलियों तक पहुँचने का
भरसक प्रयास कर रही हों
पर उन्हें राह नहीं मिलती
और मेरी कविता की पंक्तियाँ
खो जाती हैं
न जाने किन गहराइयों में
मैं बावरी सी उन्हें पुकारती हूँ
दिल और दिमाग़ से वापिस माँगती हूँ
कहाँ जाकर दब गईं
क्या मुझसे ऊब गईं
मेरे दिल, दिमाग़, अँगुलियों के पोर
जो क़लम उठाने को बेचैने थे, बेताब थे
अचानक से निर्जीव हो गए
खो गईं मेरी कविता की पंक्तियाँ
मैं बुला रही हूँ
आओ, याद आ जाओ
यूँ न छीनो मेरे दिल दिमाग़ की शक्तियाँ

○○○

वंदना सृष्टि की अभी तलक

सृष्टि के कण-कण की अर्चना करी मैंने
फिर भी न पहुँच सका लक्ष्य तक अभी तलक
मिलने को बहुत कुछ मिलता रहा राहों में
लेकिन वो सत्य तो मिला नहीं अभी तलक
ढूँढता रहा मैं जिसे पल-पल इस ज़िन्दगी में
वो मूरत तो मुझको मिली नहीं अभी तलक
काँटे तो राह में मिलते रहे हमेशा ही
फूलों की चाह भी न ख़त्म हुई अभी तलक
उलझनों में उलझते निकलते कटी ज़िन्दगी
चैन की तो साँस भी नसीब न अभी तलक
पूजन-अर्चन-वंदन भी कर-कर के हार गया
मेरे रोग का न पथ्य मुझे मिला, कहीं अभी तलक
भोला मन मेरा निराशा तो अभी नहीं
शायद कोई राह बची हो मेरे लिये अभी तलक
जीऊँगा जब तक वंदना करूँगा सृष्टि की
इसी सृष्टि ने तो मुझे ज़िन्दगी दी अभी तलक

○○○

तमाशा है ज़िन्दगी

जीवन के भिन्न-भिन्न रंगों का आभास ज़िन्दगी
कभी संतुष्टि कभी है प्यास ज़िन्दगी
कभी है मित्र कभी शत्रु ज़िन्दगी, कभी अपनी लगे कभी पराई ज़िन्दगी
कभी नफ़रत कभी है प्यार ज़िन्दगी
कभी घृणा कभी है दुलार ज़िन्दगी
कभी तुष्टि कभी है तृषा ज़िन्दगी
कभी सत्य कभी है मृषा ज़िन्दगी
कभी अँधियारा अतीत कभी उज्जवल भविष्य ज़िन्दगी
कभी दिशाहीन कभी वांछित गन्तव्य ज़िन्दगी
कभी जी भर लाड़ लड़ाये ज़िन्दगी
कभी परस्पर लड़ाइयाँ करवाये ज़िन्दगी
कभी पाताल से गह्वर-सी लगे ज़िन्दगी
कभी उत्तुंग शिखर सी लगे ज़िन्दगी
कभी अमावस की काल निशा ज़िन्दगी
कभी सूर्य सी ज्योतित दिशा ज़िन्दगी
कभी तीख़ी कभी फीकी है ज़िन्दगी
कभी त्यौहार के उत्सव सरीखी है ज़िन्दगी
कभी विजय कभी है हार ज़िन्दगी
कभी थपकी कभी है प्रहार ज़िन्दगी
कभी जीने की तमन्ना कभ मौत की मनौती ज़िन्दगी
कभी सब त्यागने की, कभी कुछ कर गुज़रने की चुनौती ज़िन्दगी
अनगिनत उलझनों का पिटारा है ज़िन्दगी
संघर्षों का ही दूसरा नाम ज़िन्दगी
कभी असफलता कभी सफलता का ईनाम ज़िन्दगी
हर रंग में जीने की आस ज़िन्दगी
जीने के भिन्न-भिन्न रंगों का आभास ज़िन्दगी

○○○

किनारा किसको मिलता है

डूबता माँझी करे पुकार किनारा किसको मिलता है
पुकारे दिशाहीन मँझधार ध्रुवतारा किसको मिलता है

लक्ष्य तक पहुँच सका है कौन
कोई चिल्लाये कोई मौन
सम्भ्रमित देख रहा चहुँ ओर
सहारा किसको मिलता है

हँस रही नदिया की जलधार
कौन जायेगा उसके पार
खिवैया जो न माने हार
किनारा उसको मिलता है

है सब नक्षत्रों का ये खेल
कहीं उल्टे कहीं है मेल
जहाँ हैं सबके मन अनुकूल
सितारा उनको मिलता है

छोड़कर तू माटी का मोह
गगन के तारों से करता मोह
न राहें हैं न है मंज़िल
वो तारा किसको मिलता है

भँवर में गोते खा-खाकर
फँसा डूबा कोई अपना
बहा ले अपनी लहरों में
वो धारा किसको मिलता है

न आधा ले के ख़ुश होता
न पूरा पा सका कोई
जो दिल को भर दे ख़ुशियों से
वो सहारा किसको मिलता है

○○○

बरसो तुम मेघा

बरस-बरस तुम बरसो मेघा
बरस-बरस धरती सरसाओ
सूखी बंजर धरती पर भी
सूखे में दाने उपजाओ
गरज-गरज गर्जन-तर्जन कर
जीवन में नर्तन भर जाओ
ढोल नगाड़े बजा-बजाकर
मधुर गीत संगीत सुनाओ
कोई मेघ मल्हार गा रहा
कोई बिरहा गाकर रोया
याद करे मैके को बिटिया
सावन का झूला याद आया
कोयल मोर पपीहा बोलें
गूँज रहे वन-उपवन सारे
कुहू-कुहू पी पीहू-पीहू
सब अपने प्रियतम को पुकारें
कूप तड़ाग नदी नाले सब
पार कर रहे हैं सीमायें
जैसे मेघराज से मिलने
हो प्रसन्न सब दौड़ जायें
बूँद-बूँद कितनी सुखदाई
जब आओ जीवन भर जाओ
बरस-बरस तुम आते रहना
करो वचन न कभी तरसाओ
बरख-बरख बरसो तुम मेघा
बरस-बरस धरती सरसाओ

○○○

कहाँ से आते बादल

कहाँ-कहाँ से आते बादल
कहाँ-कहाँ को जाते
पानी लाकर दूर-दूर से
सबकी प्यास बुझाते
उनके मन में कोई नहीं हैं
अपने और पराये
ख़ूब बराबर बाँट के देते
जितना जल भरकर लाये
न वो देखें ज़ात-पात को
न ही अमीरी-ग़रीबी को
वन उपवन पर्वत या मरुथल
देते भेंट सभी को
बरसें रिमझिम-रिमझिम छम-छम
सबमें बाँटें ख़ुशियाँ
करें प्रतीक्षा आओ बादल
उन्हें बुलाये दुनिया
बरस-बरस आते हैं बादल
बरस-बरस देते पानी
झूला झूलें सारी बेटियाँ
ओढ़ के चूनर धानी
सावन के गाने गा-गाकर, कहती बरस-बरस तुम आना
प्यारे बादल आते रहना, धरती को सरसाते रहना
इसी तरह हर साल हैं आते, भर-भर पानी लाते बादल
अपना काम ख़तम करके फिर, जाने कहाँ को जाते बादल

ooo

- प्रकाशित कृतियाँ -

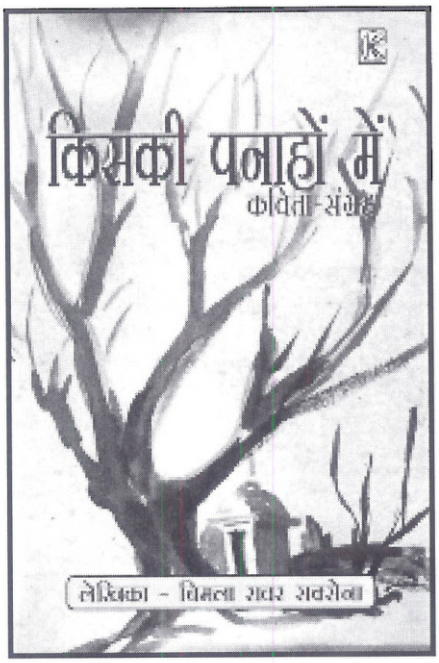
किसकी पनाहें में
कविता-संग्रह
लेखिका - बिमला रावर सक्सेना

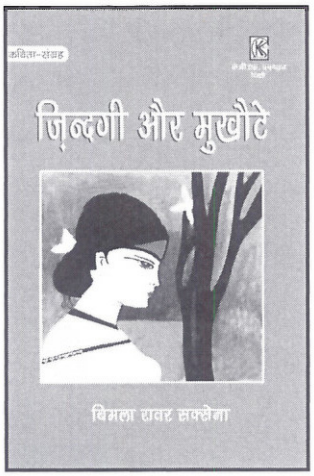
कविता-संग्रह
ज़िन्दगी और मुखौटे
बिमला रावर सक्सेना

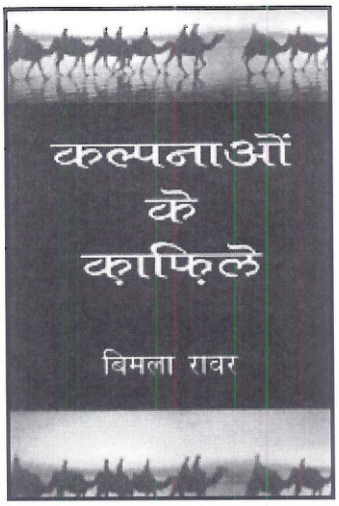
कल्पनाओं
के
क़ाफ़िले
बिमला रावर

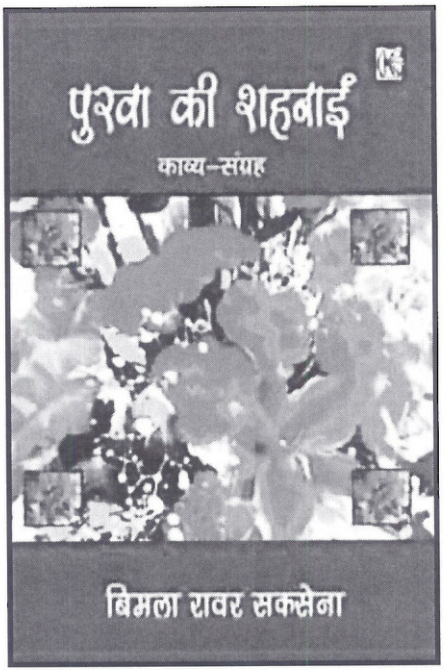
पुरवा की शहनाई
काव्य-संग्रह
बिमला रावर सक्सेना

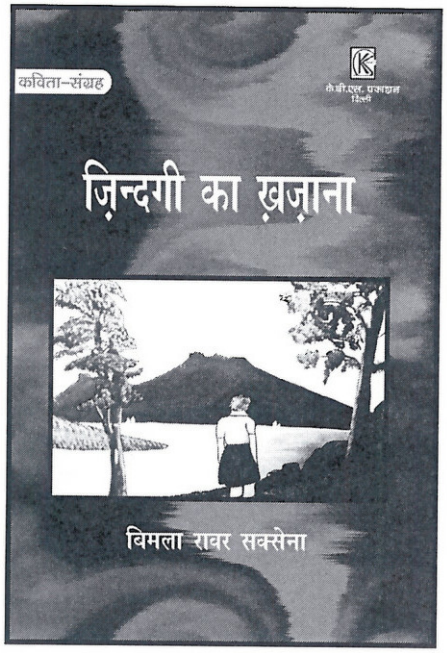
कविता-संग्रह
ज़िन्दगी का ख़ज़ाना
विमला रावर सक्सेना

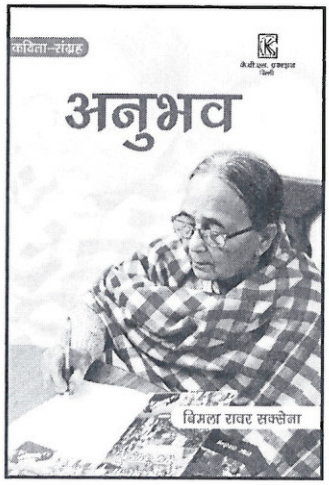
कविता-संग्रह
अनुभव
बिमला रावर सक्सेना

गुनगुनी धूप सी यादें...
कविता संग्रह
लेखिका - विमला रावर सक्सेना

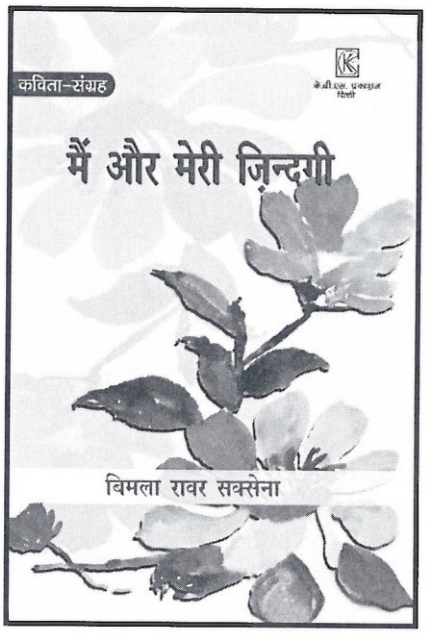
कविता-संग्रह
मैं और मेरी ज़िन्दगी
बिमला रावर सक्सेना

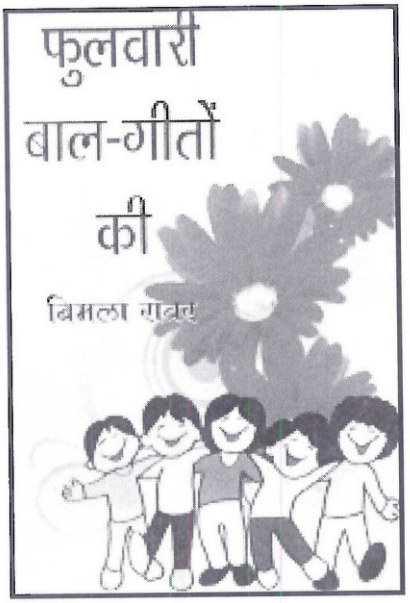
फुलवारी
बाल-गीतों
की
बिमला गुप्ता

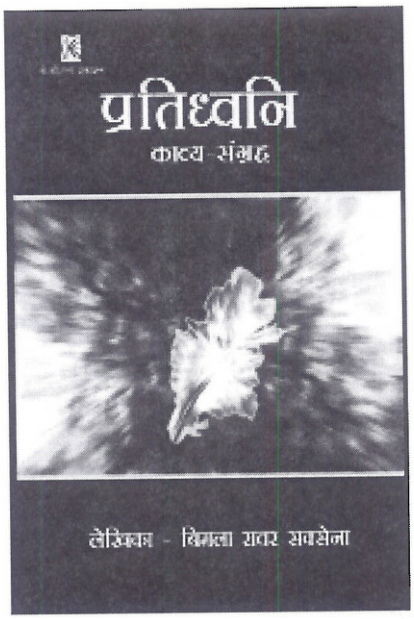
प्रतिध्वनि
काव्य संग्रह
लेखिका - विमला रावत सक्सेना

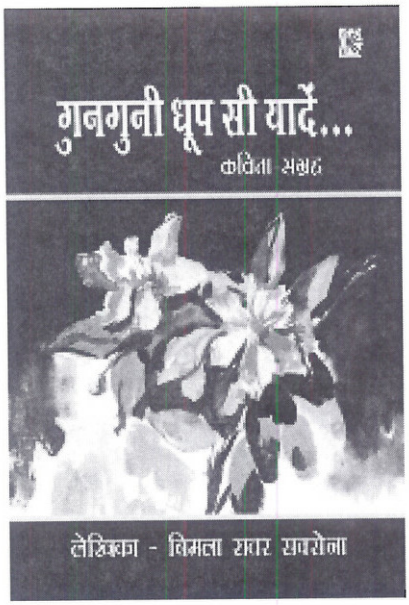
गुनगुनी धूप सी यादें...
कविता संग्रह
लेखिका - विमला रावत सक्सेना

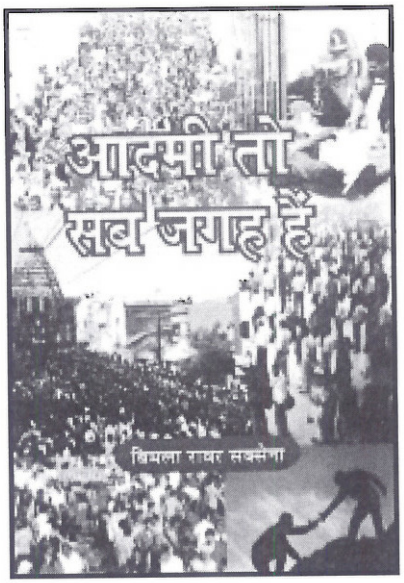
आदमी तो
सब जगह है
विमला रावत सक्सेना